• वर्ष 49 • अंक 04 • अप्रैल 2022

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 49 ● अंक 04 ● अप्रैल 2022 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एम. पी. प्रिंटर्स बी-220 फेस-II,
नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध-सम्पादक
सुलेख साथी

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
12. चित्रकथा
30. कभी न भूलो
34. किट्टी
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

कविताएं

7. कर्त्तव्य बोध
: शंकर लाल माहेश्वरी
16. बच्चे पढ़ने वाले
: शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी
16. मीठा फल
: महेन्द्र सिंह शेखावत
21. हम आगे बढ़ते जाएंगे
: ऋषभ श्रीवास्तव
27. बच्चो तुम
: प्रो. शरद नारायण
27. देश की तकदीर बनो
: हरिप्रसाद धर्मक
31. विश्व पृथ्वी दिवस
: खुशी राणा
31. हमें बता दो कोयल जी
: कल्पनाथ सिंह
41. माता-पिता की सेवा
: कमल सिंह चौहान

कहानियां

8. मुझे भी पढ़ना है
: ललित शौर्य
17. पिंकू और चिड़िया ...
: कुसुम अग्रवाल
22. बदला और बलिदान
: दिनेश जैन
25. अन्न का आदर करें
: जैकी दुल्हानी
28. आम का पेड़
: सुकृति आहूजा
32. प्रकृति का नियम
: गोविन्द भारद्वाज
47. वह घमण्डी हार गया
: दिनेश दर्पण

विशेष/लेख

11. दर्जिन चिड़िया
: किरण बाला
20. टापिर
: कमल सौगानी
24. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमंडीलाल अग्रवाल
38. विचित्र संयोग
: उमाशंकर यादव
39. राह दिखाई ...
: सुमेश निषाद
42. हार्पसील
: फेनम सौगानी
46. सिंह मछली
: परशुराम शुक्ल

अच्छा मित्र अच्छा मानव

बच्चे तो बच्चे ही होते हैं। उन्हें कोई भी अपनी ओर आकर्षित कर सकता है क्योंकि वे केवल प्रेम की पराकाष्ठा में जीते हैं। जो भी उन्हें प्रेम देता है वे उसी की ओर खिंचते चले जाते हैं। और तो और वे कोई भी कार्य करते हैं उसमें अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं। रोते हैं, हँसते हैं, गुस्सा करते हैं, बोलते हैं, चिल्लाते हैं या खेलते और लड़ते भी हैं। बच्चे लड़ते हैं परन्तु कुछ ही मिनटों में दूसरा 'सॉरी' कह देता है तो वे अपनी 'कट्टी' अर्थात् (मैं तुमसे नहीं बोलूंगा) को ऐसे भूल जाते हैं जैसे कुछ हुआ ही नहीं। उसी प्रेम के साथ अपने नन्हें-नन्हें दोस्तों से खेलते हैं फिर यही क्रम अनेकों बार होता रहता है। फिर भी वे मित्र ही रहते हैं।

जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं। स्कूल में विद्या प्राप्त करने जाते हैं, कॉलेज पहुँच जाते हैं वहाँ भी उनके अनेकों मित्र बन जाते हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जैसे-जैसे हम उच्च शिक्षा ग्रहण करते हैं तो हमें शिक्षा के लिए कई चुनाव भी करने पड़ते हैं। एक मित्र 'कॉमर्स' क्षेत्र में जाता है तो दूसरा 'आर्ट्स' में और तीसरा 'साइंस' में, इत्यादि-इत्यादि। क्योंकि सबकी रुचि और आगे बढ़ने की दिशा अलग-अलग होती है। अलग-अलग शिक्षा प्राप्त करते हुए भी मित्रों में इस कारण मित्रता में कमी नहीं आती कि बाकी मित्रों ने एक ही विषय में शिक्षा क्यों जारी नहीं रखी। मित्रता तो मित्रता ही होती है। मित्रता किसी एक विषय या अलग-अलग विचारों के कारण छिन्न-भिन्न नहीं होती। मित्रता न अमीरी-गरीबी की मोहताज होती है और न ही किसी ऊँच-नीच की। यह तो केवल एक-दूसरे पर पूर्ण विश्वास और प्रेम की अनोखी मिसाल होती है।

वास्तव में यह बात सत्य है कि जो बात कई बार हम अपने सगे-सम्बन्धियों, माता-पिता या बहन-भाई से नहीं कर सकते। उन्हीं बातों और मन के भावों को हम अपने मित्रों के सामने बड़े ही सहज ढंग से रख सकते हैं और रखते भी आए हैं। जरूरत और मुसीबत में काम आने वाला ही सच्चा दोस्त है। हमारी तकलीफ को अपनी समझकर उसे दूर करने का प्रयास करे और फिर यह सब कुछ करके एहसान भी न जताए और इस तरह से रहे कि जैसे मैंने कुछ किया ही नहीं। वह केवल सच्चा दोस्त ही नहीं, वास्तव में वह एक अच्छा इन्सान भी होता है।

हमारे सबके दोस्त हैं अगर वे इस तरह के हैं कि सहायता करते भी हैं और जताते भी नहीं, मुसीबत आने पर साथ छोड़कर भागते भी नहीं, जो केवल मुस्कुराहट बांटते हैं। उसी को एक मित्र, एक अच्छा इन्सान कहते हैं और जो मानव को मानव समझता है वह मानवता का जीवन्त उदाहरण होता है।

आओ, हम भी अच्छे मानव बनें, मित्र बनें और सबका हँसते-हँसते सहयोग करें। किसी से अपेक्षा न करें कि वह हमारा मित्र बनें बल्कि हम ऐसे बनें कि बाकी हमसे मित्रता करने की चाह रखें।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 248

सत्गुर दे लड़ लग्गे जेहड़ा उसनूं औन्दी तोट नहीं।
अंदरों बाहरों सच्चा सुच्चा पाक साफ़ कोई खोट नहीं।
राजा सारी दुनियां दा ए राज़ जो एहदा जाण लए।
दुख दलिद्दर नेड़ ना आवण जे सत्गुर पहचाण लए।
रग रग विच एह रमया होवे स्वास स्वास विच इसदा ध्यान।
कहे अवतार मैं वारी घोली ऐसे गुरसिख तों कुरबान।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि संसार की माया का मोह छोड़कर सत्गुरु के साथ जुड़ जाओ, सत्गुरु का पल्ला पकड़कर इसके पीछे-पीछे चलो, इसका अनुसरण करो। फिर तुम्हें जीवन में कोई कमी आने वाली नहीं है। संसार की और चीजों तथा इन चीजों की चकाचौंध के पीछे भागने से कोई लाभ होने वाला नहीं है बल्कि इससे मन में लोभ और ज्यादा बढ़ता चला जाएगा। सत्गुरु के साथ जुड़ने से इन्सान का द्वैत भाव समाप्त हो जाता है, वह अन्दर-बाहर से एक समान साफ-सुथरा बन जाता है। वह अच्छाई और सच्चाई से भर उठता है। उसके अन्दर कोई खोट या कोई कमी नहीं रह जाती है। जिस प्रकार सोने को उच्च ताप पर गर्म करके पिघलाने पर उसका खोट बाहर आ जाता है, उसकी कमी दूर हो जाती है और वह शुद्ध-स्वच्छ बन जाता है। इसी तरह सत्गुरु का पल्ला पकड़ने वाला, इसका अनुयायी बनने वाला अपनी कमियों और बुराईयों से मुक्त हो जाता है।

सत्गुरु निरंकार-परमात्मा का साकार रूप है, जो इन्सान इसको इस रूप में पहचान लेता है उसकी समस्त गरीबी-दरिद्रता समाप्त हो जाती है। वह कंगाल नहीं रह जाता बल्कि नामधन की पूंजी से मालामाल हो जाता है। सत्गुरु से जो परमात्मा का भेद जान लेता है, वह सारी दुनिया के राजा के समान हो जाता है। उसकी सारी विपन्नता, सारी परेशानी और अभाव तत्काल समाप्त हो जाता है। गुरुकृपा से निरंकार को जानकर भक्त अपनी रग-रग में, अपने स्वांस-स्वांस में इस रमे-राम को बसा लेता है। निरन्तर इस प्रभु के ध्यान में रहने के कारण वह पाक-पवित्र और पूज्यनीय बन जाता है।

बाबा अवतार सिंह जी गुरसिख की ऐसी ऊँची अवस्था को सम्मान प्रदान करते हुए कह रहे हैं कि ऐसे समर्पित गुरसिख पर मैं कुरबान जाऊं, उस पर बलिहारी जाऊं। इसलिए सन्त-महात्मा बार-बार इन्सान को सचेत करते हैं कि सत्गुरु के वचनों को सत्य मानो। हमें सत्गुरु के वचनों को हृदय में बसाकर गुरसिखी वाला सुन्दर जीवन जीना चाहिए।

भावार्थ : हरजीत निषाद

अनमोल वचन

❖ अहंकार हमारी गलतफहमियों के फासले को बढ़ा देता है। हमने सभी के साथ अहम भाव से ऊपर उठकर प्यार से व्यवहार करना है।

❖ इन्सान माया के आकर्षण में इतना अधिक डूब जाता है कि वह हर प्रकार की कोशिश करता है अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए। फिर चाहे उसके लिए उसे झूठ और चालाकी का सहारा ही क्यों न लेना पड़े। इसके विपरीत जब अंतर्मन से आवाज आती है कि कुछ गलत कर दिया तब पश्चाताप न करके वह उसके स्थान पर बहाने बनाकर उसे दबा देता है।

❖ इस संसार में रहकर माया का प्रयोग अवश्य करना है किन्तु जीवन में संतुलन बनाना भी आवश्यक है। हमें अपनी प्राथमिकताएं तय कर लेनी चाहिए। जाग्रत होकर हर कार्य करें। सभी में प्रभु का दर्शन करते हुए हृदय को विशाल बनाए। रिश्ता यदि दिल से जुड़ा हुआ हो तो कहने से पहले ही बात दूसरे तक पहुँच जाती है। दूसरों को प्रसन्न देखकर हमें तब अत्यधिक प्रसन्नता होती है। एक-दूसरे के दर्शन करके तब मन आनंदित हो जाता है।

– सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

❖ दिखावे की सेवा लाभदायक नहीं होती। जितनी भी सेवा की जाए, दिल से की जाए।

❖ दर-दर भटकने वाला जिसे कोई भी नहीं पूछता हो, वह सत्गुरु द्वारा अपनाए जाने पर पूजा के काबिल बन जाता है।

❖ प्यास तो केवल पानी से ही बुझती है परन्तु धन्यवाद हम पानी का नहीं बल्कि पिलाने वाले का ही करते हैं। इसी प्रकार भक्त का धन्यवाद सत्गुरु की सेवा द्वारा होता है।

❖ सच्चा विद्वान वही होता है जो पढ़ते-पढ़ते अनुभव की भाषा बोलना शुरू कर दे।

– युगप्रर्वतक बाबा गुरबचन सिंह जी

❖ जैसे सूर्य आकाश में छुप नहीं सकता उसी प्रकार महापुरुष भी संसार में गुप्त नहीं रह सकते।

– वेदव्यास

❖ सत्य से कीर्ति प्राप्त की जाती है और सहयोग से मित्र बनाये जाते हैं।

– कौटिल्य

❖ मानव की सेवा करना मानव का सर्वप्रथम कर्तव्य है।

– विनोबा भावे

❖ मार्ग में हजारों रुकावटें आने पर भी अपने मकसद से पीछे न हटो।

– श्रीराम शर्मा

❖ यह धरती ही हमारे कर्मों की भूमि है।

❖ जिनमें उत्साह नहीं है, वे केवल काठ के पुतले हैं।

❖ जीवन का एक पल करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं के देने पर भी नहीं मिलता है।

❖ महापुरुषों की शिक्षाओं को हम जीवन में अपनाएं तो हमारे विचार सुन्दर बनेंगे तब हम सुख और प्रसन्नता महसूस करेंगे।

– अज्ञात

❖ संकलन : रामअवध राम

कविता : शंकर लाल माहेश्वरी

कर्त्तव्य बोध

आओ बच्चों तुम्हें सिखाएं,
बातें हैं कुछ काम की।
मात-पिता की सेवा करना,
बात बड़ी है शान की।।

गुरुजनों के आज्ञापालन से,
कर्त्तव्य तुम अपना निभाओ।
पास पड़ोसी रहे सुखी सब,
ऐसा धर्म सभी अपनाओ।।

मन में आये दुष्कर्म कभी,
दूर करो तुम उन्हें तभी।
बुद्धिबल का काम है यह,
संस्कारी तुम बनो सभी।।

सेवा का जब आवे मौका तो,
पाओ उसको करो न धोखा।
विद्यालय को तुम अपना मानो,
घर ही है वह ऐसा तुम जानो।।

हरित क्रांति और स्वच्छता का,
घर-घर जाकर पाठ पढ़ाओ।
शिक्षित होकर आगे बढ़ो तुम,
राष्ट्र प्रेम की अलख जगाओ।।

चोर लुटेरों और गद्दारों से,
सुरक्षित रहे यह देश हमारा।
बेईमानी और भ्रष्टाचार से,
मुक्त रहे यह भारत प्यारा।।

भेदभाव मत करो परस्पर,
स्वीकार करो यह है हितकर।
सभी रहो मिलजुलकर तुम,
मेहनत करो तुम सब डटकर।।

पढ़ो-लिखो तुम वीर बनो,
अच्छे लोगों का साथ करो।
मातृभूमि की रक्षा के हित,
अपना सर्वस्व बलिदान करो।।

बाल कहानी : ललित शौर्य

मुझे भी पढ़ना है

ऋतु बहुत मेहनती लड़की थी। वह अपनी माँ के कामों में हाथ बंटाया करती थी। उसकी उम्र लगभग सात साल थी। उसके पिता मजदूर थे। वह दिनभर हाड़तोड़ मेहनत करते थे। माँ लोगों के घरों में बर्तन और झाड़ू-पोछे का काम करती थी।

ऋतु भी कभी-कभी माँ के साथ काम पर जाया करती थी। वैसे वह घर पर रहकर ही अपने दो साल के भाई को देखती थी। उसके खाने-पीने, नहलाने का ध्यान रखती थी।

ऋतु कभी स्कूल नहीं गई। उसका मन स्कूल जाने का होता था। लेकिन उसके मम्मी-पापा ने उसे कभी स्कूल भेजने के बारे में सोचा ही नहीं। वे लोग अपने ही कार्यों में लगे रहते थे। ऋतु जहाँ रहती थी उससे कुछ ही दूरी पर एक स्कूल था। वहाँ से अक्सर बच्चों के पढ़ने की आवाजें आती रहती थीं। उसे जो भी सुनाई देता वह मन ही मन दोहराती थी। उसका दिमाग बहुत तेज था। उसे सुनकर सब याद हो जाता। उसने एक कविता भी याद कर ली थी। उसे पढ़ना लिखना नहीं आता था। लेकिन वह जो सुनती उसे एकदम से याद कर लेती।

एक दिन ऋतु की मम्मी को तेज बुखार आ गया था। वह बिस्तर से उठ नहीं पाई।

'बेटा आज मेरी तबियत ठीक नहीं है। मैं काम पर नहीं जा सकती। क्या तुम आज के लिए काम पर जा पाओगी।' मम्मी ने कहा।

'ठीक है मम्मी, बताओ कहाँ जाना है?' ऋतु ने पूछते हुए कहा।

'बेटा चौराहे के पास वाली गली में मास्टर जी के घर पर। लेकिन ध्यान रहे काम करते समय कोई गड़बड़ न हो। बर्तन धोते समय शीशे के बर्तनों का विशेष ध्यान रखना। टूटने न पाए।' मम्मी ने समझाते हुए कहा।

'ठीक है, मैं सब कर लूँगी। आप चिंता मत करो। बस आराम करो।' ऋतु ने कहा।

ऋतु मास्टर जी के घर की ओर चल दी। उसने आराम से चौराहा पार किया और घर तक पहुँच गई। घर का दरवाजा बंद था। उसने 'डोरबेल' बजाई। मास्टर जी ने दरवाजा खोला।

'कौन हो तुम, क्या चाहिए?' मास्टर जी ने पूछा।

'वो आज मम्मी की तबियत ठीक नहीं है। इसीलिए मैं काम करने आई हूँ।' ऋतु ने कहा।

'आओ बेटा अन्दर आ जाओ, तुम काम करोगी। नहीं मैं तुमसे कोई काम नहीं करवाऊंगा।

तुम तो मेरी बेटी के समान हो।' मास्टर जी ने कहा।

'अगर मैं काम नहीं करूंगी तो आज की पगार कट जाएगी।', ऋतु ने मायूस होते हुए कहा।

'कोई पगार नही कटेगी। तुम्हारी मम्मी को पूरे रुपये मिलेंगे। बच्चों का काम केवल पढ़ना, खेलना और मुस्कुराते रहना है। ये घर का काम बड़ो का है।' मास्टर जी ने कहा।

'पर मम्मी ने मुझे काम करने को कहा है।' ऋतु ने कहा।

'कोई बात नहीं बेटा। छोटा मोटा काम है। आज तुम्हारी आंटी कर लेगी। सुनो तुम स्कूल जाती हो? कौन सी क्लास में पढ़ती हो?' मास्टर जी ने पूछा।

'नहीं मैं स्कूल नहीं जाती। लेकिन मुझे पता है स्कूल में क्या पढ़ाया जाता है?' ऋतु ने जवाब देते हुए कहा।

'अच्छा हमें भी तो बताओ क्या पढ़ाया जाता है?' मास्टर जी ने मुस्कुराते हुए कहा।

ऋतु ने तुरन्त एक कविता सुना दी। जो उसने याद की थी।

'अरे वाह! तुम तो होशियार बिटिया हो। क्या लिखना और पढ़ना भी जानती हो?' मास्टर जी ने पूछा।

ये प्रश्न सुनकर ऋतु मायूस हो गई। उसने न में सर हिलाया।

'कोई बात नहीं। मैं तुम्हारे पढ़ने की व्यवस्था कर दूंगा। तुम्हें पढ़ने का पूरा अधिकार है।' मास्टर जी ने कहा।

'पर... बापू तो स्कूल भेजते ही नहीं।' ऋतु ने कहा।

'मैं तुम्हारे बापू को समझाऊंगा। तुम अभी घर जाओ मैं शाम को तुम्हारे घर आऊंगा।' मास्टर जी ने कहा।

ऋतु खुशी-खुशी घर लौट गई। उसने मम्मी को सारी बता दी थी। मम्मी का बुखार भी उतर चुका था।

शाम हो चुकी थी। ऋतु के बापू भी घर आ चुके थे। उसी समय दरवाजे पर किसी के आने की आवाज सुनाई दी। ऋतु दौड़कर बाहर निकली। बाहर मास्टर जी थे। ऋतु उनको देखकर बहुत खुश हुई।

ऋतु के बापू और मम्मी भी बाहर आ गए। सभी ने मास्टर जी को नमस्ते किया।

उन्हें बैठने के लिए कुर्सी दी। मास्टर जी ने सभी का हालचाल पूछा।

'मैंने सुना है कि ऋतु स्कूल नहीं जाती। आप लोग इसे स्कूल क्यों नहीं भेजते?' मास्टर जी ने ऋतु के सर को सहलाते हुए कहा।

'क्या करे मास्टर साहब स्कूल भेज कर? हम हुए गरीब आदमी। इतना रुपया कहाँ है हमारे पास। वैसे भी लड़की है। क्या करेगी स्कूल जाकर? इसका छोटा भाई है। उसको भेज देंगे स्कूल।' ऋतु के बापू ने कहा।

'कैसी बात कर रहे हैं आप? लड़का और लड़की दोनों एक समान हैं। दोनों को शिक्षा देना बहुत जरूरी है। ये इनका अधिकार है। तुम्हें रुपये खर्च करने की जरूरत नहीं है। अनिवार्य शिक्षा के तहत सरकार ने 6 से 14 साल तक के बच्चों की प्राम्भिक शिक्षा की पूरी व्यवस्था की हुई है। तुम्हें कोई रुपया खर्च नहीं करना है।' मास्टर जी ने बताते हुए कहा।

'अच्छा ऐसा भी है। ये तो हमको मालूम ही नहीं था मास्टर जी। अब मैं सोचूंगा ऋतु को स्कूल भेजने के बारे में।' ऋतु के बापू ने कहा।

'सोचना नहीं है। कल ही इसका दाखिला कराना है। फिर स्कूल भी तो यहीं पास में है।' मास्टर जी ने कहा।

'ठीक है। जैसा आप कहें। आपने हमारी आँखें खोल दीं।' ऋतु के बापू ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

मास्टर जी ने ऋतु को खूब आशीर्वाद दिया और अपने घर की ओर चल दिए।

ऋतु और उसकी माँ ये सब सुनकर बहुत खुश हुई। ऋतु स्कूल जाने को बहुत उत्सुक थी। अगले दिन ऋतु का दाखिला स्कूल में करवा दिया गया। अब वह मन लगाकर पढ़ने लगी।

आलेख : किरण बाला

दर्जिन चिड़िया

आपने दर्जी को कपड़े सीते तो देखा होगा लेकिन क्या कोई पक्षी दर्जी की भांति सिलाई कर सकता है? नहीं जानते तो चलो, हम ही बता देते हैं। इस पक्षी का नाम है दर्जिन चिड़िया। जी हाँ, यह सिलाई कला में इतनी निपुण है कि अपना घोसला भी सीकर बनाती है।

प्रकृति ने ऐसी चिड़ियाओं को पैदा किया है जो किसी अजूबे से कम नहीं है। इन्हीं में से एक है दर्जिन चिड़िया। वैसे यह दिनभर इधर-उधर फुदकती रहती है। इसलिए इसे फुदकी चिड़िया के नाम से जाना जाता है। स्वभाव से यह काफी चंचल और निडर है। यह चहकती भी खूब है। जब ये जोश में होती है तो अपनी पूँछ को ऊपर उठा लेती है।

दर्जिन चिड़िया आकार में गौरैया से कुछ छोटी होती है। कीट-पंतगे ही मुख्य रूप से इसका भोजन है। अपने भोजन की तलाश में ही यह भटकती रहती है।

प्रकृति ने इसकी पीठ जैतुनी हरे रंग की बनाई है जबकि निचला भाग सफेद होता है। इसके पंख छोटे और गोलाकार होते हैं। चोंच सीधी और लम्बी होती है। यह चोंच बहुत काम की चीज है। इससे न केवल वह अपना भोजन ग्रहण करती है अपितु घोसला भी बनाती है।

जिस तरह कपड़े सीने के लिए सुई और धागे की जरूरत होती है उसी प्रकार घोसला बनाने हेतु भी इनकी आवश्यकता होती है। सुई का काम इनकी चोंच करती है जो कि सधी हुई और लम्बी होती है और धागे का काम सरपत के बारीक तार करते हैं। जब इसे घोसला बनाना होता है तो यह ऐसे पेड़ को तलाशती है जिसके पत्ते चौड़े हैं क्योंकि बड़े और चौड़े पत्ते को सीना आसान होता है। यदि सरपत तार न भी हों तो इसके विकल्प के रूप में सेमल या आकड़े की रूई के धागे का इस्तेमाल करती है। कभी-कभी तो यह मकड़ी के जाले के धागों का भी प्रयोग घोसले के पत्तों को आपस में जोड़ने या सीने में करती है।

आमतौर पर यह अपने घोसले का मुँह ऊपर की ओर रखती है। इससे उसे अंडे देने और चूजों को भोजन कराने में आसानी रहती है। वैसे उसके घोसले की बनावट कई बातों पर निर्भर करती है। जैसे रोशनी, हवा का रुख आदि। उसी के अनुसार यह घोसले का मुँह रखती है। सच तो यह है कि यह बुद्धिमान और कुशल कारीगर चिड़िया है।

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

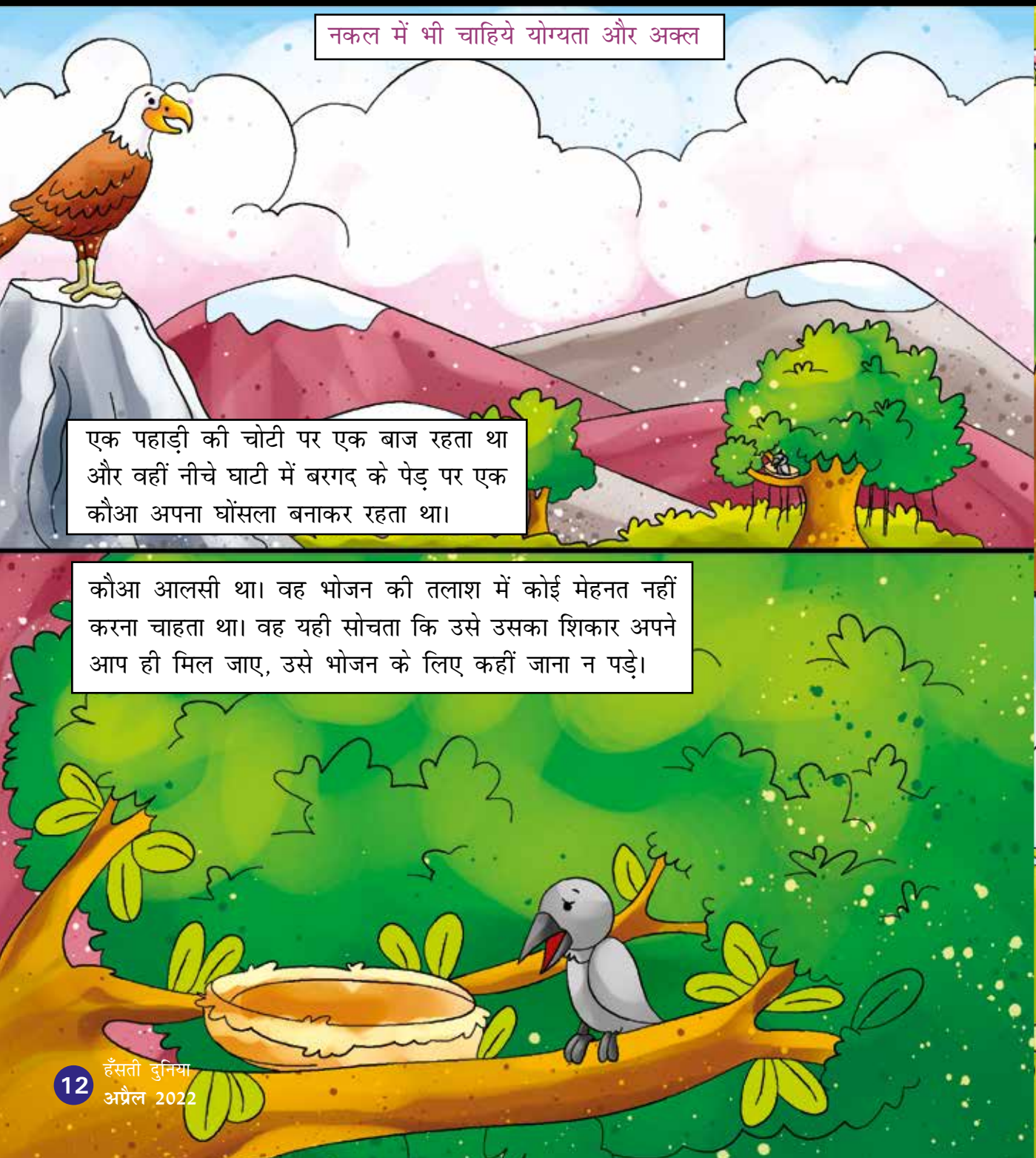

जिस पेड़ पर कौआ रहता था, उसी पेड़ के आस-पास खरगोशों की एक बस्ती थी।
कौआ हमेशा सोचता कि ये सुंदर-सुंदर खरगोश उसे खाने को मिल जाएं तो बहुत अच्छा हो।
बाज कभी-कभार ऊपर से झपट्टा मारकर खरगोशों का शिकार किया करता था।

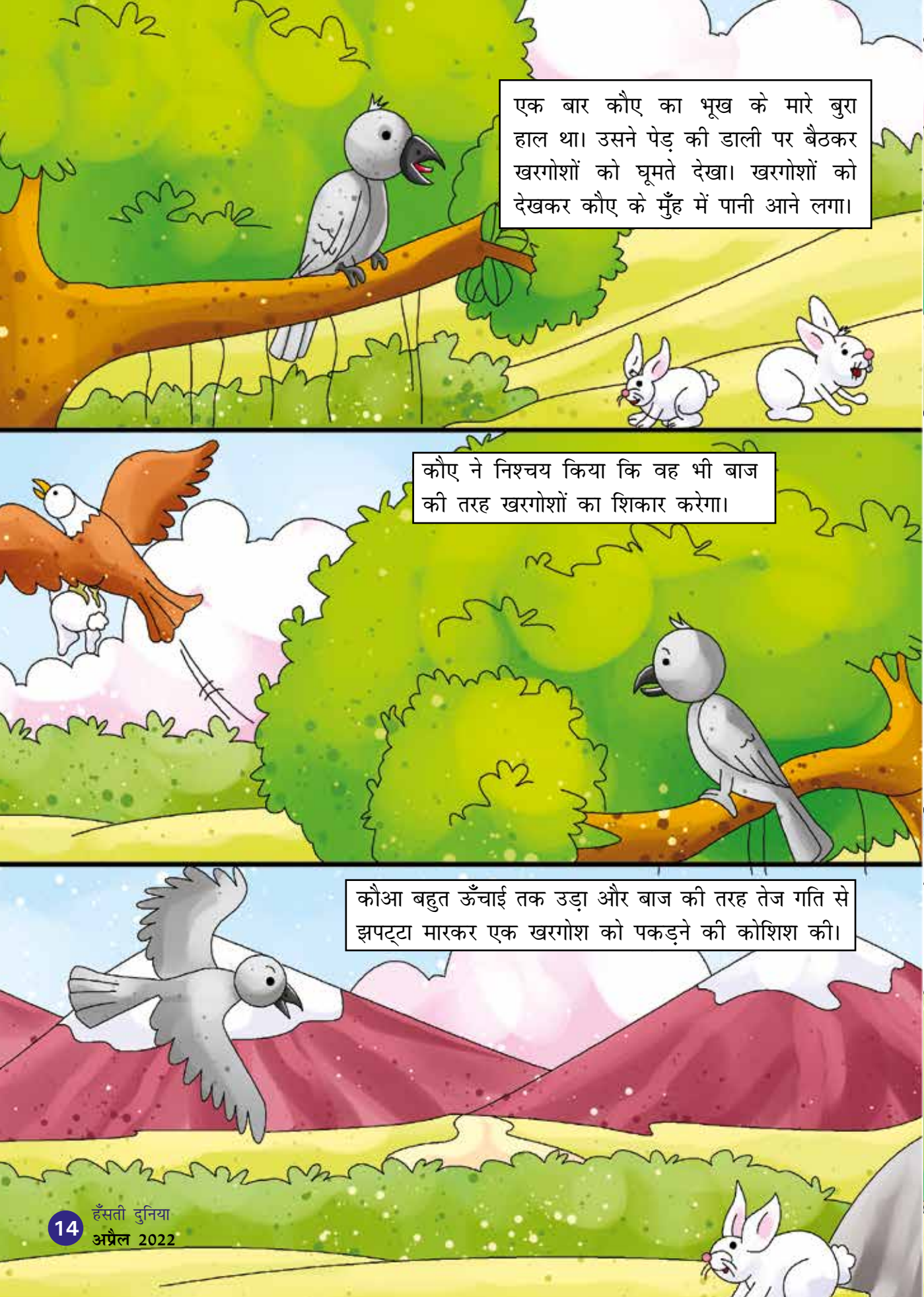
एक बार कौए का भूख के मारे बुरा हाल था। उसने पेड़ की डाली पर बैठकर खरगोशों को घूमते देखा। खरगोशों को देखकर कौए के मुँह में पानी आने लगा।
कौए ने निश्चय किया कि वह भी बाज की तरह खरगोशों का शिकार करेगा।
कौआ बहुत ऊँचाई तक उड़ा और बाज की तरह तेज गति से झपट्टा मारकर एक खरगोश को पकड़ने की कोशिश की।

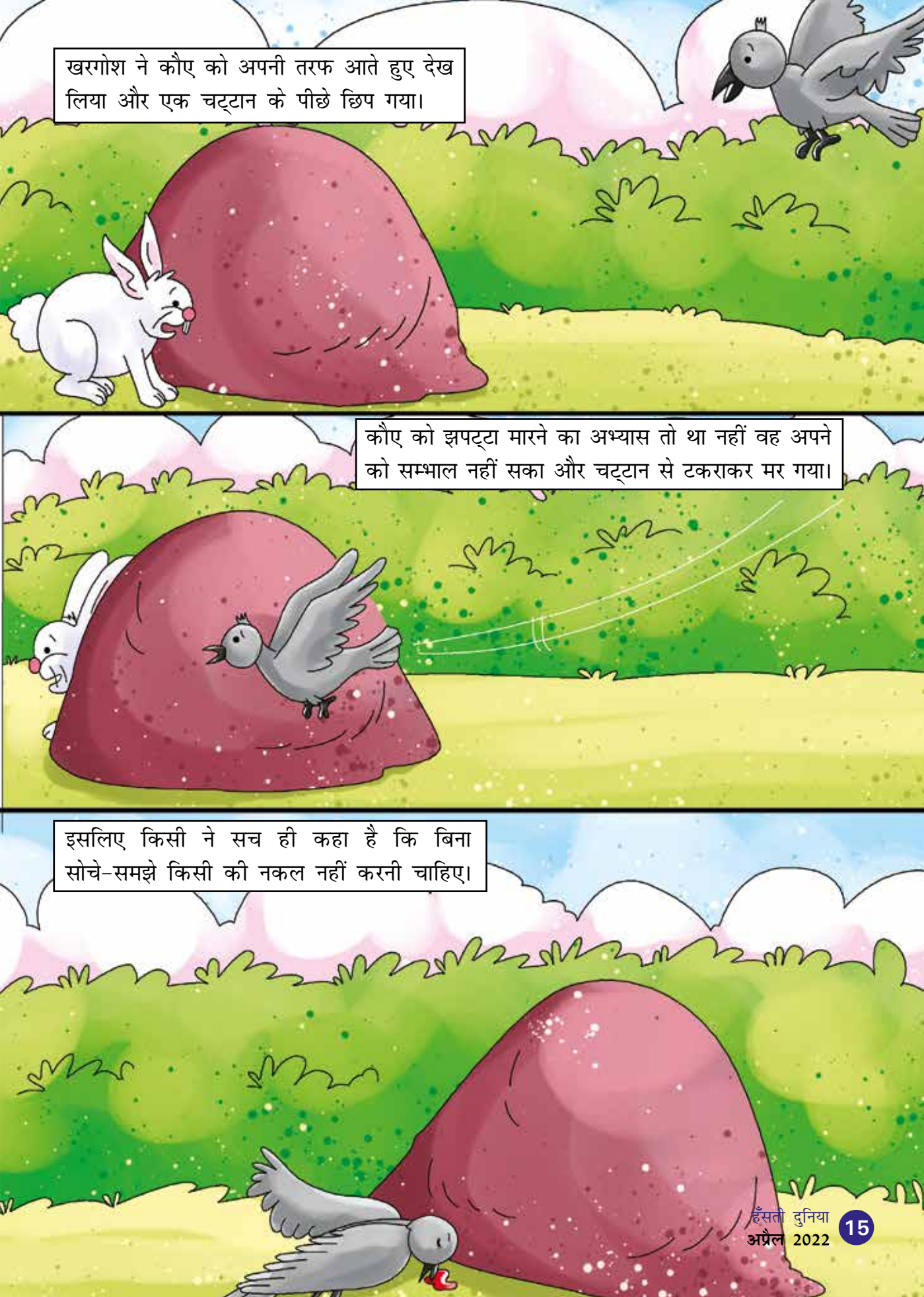
खरगोश ने कौए को अपनी तरफ आते हुए देख लिया और एक चट्टान के पीछे छिप गया।
कौए को झपट्टा मारने का अभ्यास तो था नहीं वह अपने को सम्भाल नहीं सका और चट्टान से टकराकर मर गया।
इसलिए किसी ने सच ही कहा है कि बिना सोचे-समझे किसी की नकल नहीं करनी चाहिए।

कविता : शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

बच्चे पढ़ने वाले

हम बच्चे पढ़ने वाले हैं,
पढ़ते हिलमिल खेला करते।
मिलकर बाधाओं से लड़ते,
बाधाओं से कभी न डरते।।

साथ खेलते क्रिकेट मैच हम,
बोलिंग करते बैटिंग करते।
जब भी जहाँ जरूरत होती,
तुरन्त मदद को जाते।।

जैसे तारे आसमान के,
हम सब मिलजुलकर रहते।
अच्छा लगता सबका साथ,
छोटों से हम प्यार दिखाते।।

वैसे हम हरदम मुस्काते।
करते काम सभी हँसकर,
सबका मन खुश करते हैं,
रहते फूलों से खिलकर।।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

मीठा फल

सच्चे मन से जो हैं पढ़ते,
वे सब बच्चे आगे बढ़ते।

जो बड़ों की आज्ञा मानें,
सच्चे पथ को वो पहचानें।

मीठा बोलें सब को भाये,
उन्नति का मीठा फल पाये।

कहानी : कुसुम अग्रवाल

पिंकू और चिड़िया के बच्चे

एक था पिंकू। प्यारा-सा गोल-मटोल पिंकू। रोज स्कूल जाता था। पढ़ने-लिखने में बड़ा ही तेज था। अपनी कक्षा में अव्वल आता था। बड़ी मीठी-मीठी बातें करता था सबसे। जो भी देखता वह कहता– ये तो बड़ा प्यारा बच्चा है। बड़ा होकर अच्छे-अच्छे काम करेगा। अपने माता-पिता का नाम जरूर रोशन करेगा।

बस फिर क्या था, पिंकू तो फूलकर कुप्पा हो जाता। मैं तो सबसे अच्छा हूँ, यह सोचकर घर में सबसे अकड़-अकड़कर बातें करता। अपनी मम्मी का कहना भी नहीं मानता था। एक दिन की बात है पिंकू ने अपना होमवर्क पूरा कर इधर-उधर मस्ती करता घूम रहा था। कभी मोबाइल छेड़ता तो कभी टीवी चलाता। कभी पलंग पर चढ़कर नाचता तो कभी सोफे पर।

पिंकू को इस तरह खाली घूमते देखकर पिंकू की मम्मी को एक काम याद आ गया। उन्होंने आवाज लगाई– बेटे पिंकू, एक बात तो सुनो। चाय-पत्ती खत्म हो गई है। पापा अभी ऑफिस से आते ही होंगे। उन्हें आते ही चाय पीने की आदत है। जाओ बेटा, पास की दुकान से एक पैकेट चाय तो ले आओ।

बस फिर क्या था? यह सुनते ही पिंकू का पारा गर्म हो गया। एक किताब हाथ में ले ली और बोला– मुझे इन फालतू कामों के लिए फुर्सत नहीं है। परीक्षा पास आ रही है। मैं तो जा रहा हूँ बगीचे में पढ़ाई करने के लिए। मुझे तंग मत करो।

पिंकू का उत्तर सुनकर पिंकू की मम्मी बड़ी हैरान हुई। उसने सोचा– 'अभी तो उछल-कूद मचा रहा था। अचानक पढ़ाई की बातें करने लगा। बड़ा अजीब है यह लड़का।'

उन्होंने पिंकू से फिर कहा– बेटा, तुम तो बच्चे हो। दो मिनट में ला दोगे। मैं जाऊंगी तो दस झंझट करने पड़ेंगे। जाओ ला दो ना। अच्छे बच्चे मम्मी का कहना मानते हैं। पिंकू तो मेरा राजा बेटा है। मेरा सबसे अच्छा बेटा है।

'नहीं, नहीं, नहीं। मुझे नहीं करने हैं ये फालतू काम। मैं कोई नौकर हूँ जो यह काम करूँ? मेरा काम तो बस पढ़ाई करना है। मैं बगीचे में जा रहा हूँ। वहाँ मत आना मुझे तंग करने।' पिंकू ने चिढ़कर कहा।

हारकर पिंकू से मम्मी ने कहा– अच्छा कोई बात नहीं। यह काम तो मैं कर लूंगी पर तुम जब बगीचे में जा ही रहे हो तो अपनी छोटी बहन पिंकी को भी ले जाओ। यह तुम्हारे पास खेलती रहेगी। मुझे यह काम नहीं करने दे रही है।

–ऊँह! पिंकी को ले जाओ। जैसे मैं कोई 'आया' हूँ। कभी पेंसिल मांगेगी कभी कॉपी। कभी कहेगी दूध पीना है तो कभी कहेगी पानी चाहिए। एक बार कह दिया न कि मुझे इन फालतू कामों में मुझे बिल्कुल भी रुचि नहीं है।

यह कहकर पिंकू अपनी किताबें लेकर बगीचे में चला गया। बगीचे में एक नीम का पेड़ था। बस पिंकू उसी पेड़ के नीचे बैठकर कुछ सोचने लगा। तभी उसे एक आवाज सुनाई दी। जानते हो कैसी आवाज थी। चीं चीं चीं। 'अरे ये तो चिड़िया की आवाज है।' पिंकू ने सोचा। यह सोचकर उसने पेड़ के ऊपर देखा।

वहाँ एक छोटा सा, सुंदर सा, घोसला था और घोसले में एक चिड़िया और उसके दो छोटे-छोटे, प्यारे-प्यारे बच्चे थे। चिड़िया बार-बार अपने बच्चों को प्यार कर रही थी। शायद वह समझा रही थी– 'बच्चों मुझे मालूम है कि तुम्हें भूख लगी है। मैं अभी तुम्हारे लिए दाना लेने जाती हूँ। हाँ, जब तक मैं नहीं लौटूं, तुम यही रहना।' और थोड़ी देर बाद चिड़िया फुर्र से उड़ गई।

चिड़िया के जाने के बाद दोनों बच्चे फिर चीं-चीं करने लगे। मानो कह रहे हों– 'देखो, माँ हमारे लिए दाना लाने गई है। कितना ख्याल रखती है वह हमारा। हमें दाना खिलाती है। प्यार करती है और फिर सुलाती है। हम कब बड़े होंगे और अपनी माँ की सेवा करेंगे। हम तो अभी बहुत छोटे हैं। हम अपनी माँ की कुछ भी सहायता नहीं कर सकते। चलो हम भी कुछ काम करें।' तभी पिंकू ने देखा कि चिड़िया के दोनों बच्चे चोंच से छोटे-छोटे तिनके, सूखे पत्ते और कागज उठाकर घोसले से बाहर फेंक रहे हैं जैसे अपने घर की सफाई कर रहे हों। यह

देखकर पिंकू को बड़ा आश्चर्य हुआ। चिड़िया के दोनों बच्चे अभी यह काम कर ही रहे थे कि उनमें से एक बच्चा जो कि थोड़ा कमजोर और छोटा था, अचानक अपनी चोंच खोलकर जोरों से चीं-चीं करने लगा। यह देखकर चिड़िया का दूसरा बच्चा परेशान सा हो गया। वह समझ गया कि उसके भाई को जोरों की प्यास लगी है।

'परन्तु वह तो स्वयं बहुत छोटा है। कैसे पानी पिलाएगा वह अपने भाई को?' पिंकू सोचने लगा।

तभी पिंकू ने देखा कि चिड़िया का बच्चा घोसले के आसपास लगे पत्तों में कुछ ढूंढ़ रहा है। पिंकू ने उचककर देखा। जानते हो क्या देखा पिंकू ने। घोसले के पास पेड़ पर एक मुड़ा हुआ पत्ता लगा था। उसमें थोड़ा पानी था। अरे इस पत्ते में पानी कहाँ से आया? पिंकू ने सोचा। रात को बरसात हुई थी। उसी का पानी इकट्ठा हो गया होगा। जब चिड़िया के बच्चे ने पत्ते में पानी देखा तो जोरों से चीं-चीं करने लगा। शायद बहुत खुश हुआ था वह पानी देखकर। फिर क्या था। अपनी चोंच में पानी भरकर अपने छोटे भाई को पिलाना शुरू कर दिया उसने। छोटा सा तो पेट था उसका। जल्दी ही भर गया। पानी पीकर वह फिर खेलने लगा। पिंकू यह सब टकटकी लगा कर चुपचाप देख रहा था। कितना प्यार करते हैं ये सब आपस में। कितना ख्याल रखते हैं ये एक दूसरे का। वह सोचने लगा।

उसने फिर सोचा– मैं अच्छा लड़का नहीं हूँ क्योंकि मैं तो अपनी माँ का कहना मानता ही नहीं। कितनी गंदी बात है कि मैं अपनी छोटी बहन को भी प्यार नहीं करता। मुझे शर्म आनी चाहिए स्वयं पर। मेरी माँ कितना ख्याल रखती है मेरा और पिंकी तो सारे दिन भैया-भैया करती रहती है। फिर भी मैं सिर्फ अपनी सोचता हूँ। नहीं, नहीं मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। यह तो बुरी बात है।

अभी वह यह सोच ही रहा था कि अचानक उसकी मम्मी ने आवाज लगाई– 'बेटा पिंकू अंधेरा हो रहा है। अंदर आ जाओ। पिंकी बुला रही है।' यह सुनकर पिंकू ने झट से किताबें उठाई और बोला– 'अभी आया मम्मी' और वह दौड़कर घर के अंदर आ गया।

अंदर आते ही उसने झट से पिंकी को गोद में लिया और बोला– 'मेरी प्यारी बहन, मेरी छोटी बहन, आगे से तुझे मैं अपने साथ बगीचे में ले जाऊंगा। तुझे खिलाऊंगा। मैं तेरा अच्छा भैया हूँ न। मैं मम्मी का अच्छा बेटा भी बनूंगा।' पिंकू की मम्मी पिंकू के मुँह से ये बातें सुनकर बड़ी हैरान हुई। उन्होंने पिंकू को प्यार से अपने गले लगा लिया।

लेख : कमल सौगानी

एक खूबसूरत पशु

टापिर

गधे और घोड़े से तो आप परिचित होगे हीं। इन दोनों पशुओं से मिलता-जुलता एक पशु ऐसा भी है जिसमें गधे और घोड़े जैसे कई गुणों का समावेश है। इसका नाम 'टापिर' है। लेकिन यह रात्रिचर पशु है। यह नदी तालाब के नजदीक घने जंगलों में रहना पसन्द करता है। इसे पानी में तैरने और डुबकी लगाने में बड़ा आनन्द आता है। इसलिए यह दिन के समय कई बार पानी में तैरता रहता है।

हरे-भरे जंगलों में रहने वाला यह पशु पूर्णतया शाकाहारी है। यह रात के सन्नाटे में

भोजन तलाशता रहता है। यह नरम मुलायम घास, जंगली फल, कच्चे बांस, शहद आदि को बड़े चाव से खाता है।

इसकी एक दर्जन से भी अधिक जातियां हैं। यह तिब्बत, मलाया, न्यूजीलैंड, जावा, डेनमार्क, दक्षिण अमेरिका आदि के घने जंगलों में पाया जाता है। इसके शरीर पर आकर्षक चित्रकारी होती है। हाँ, कुदरत ही इसके बदन पर सुन्दर ढंग से चित्रकारी करती है। यह चित्रकारी लम्बी-लम्बी रेखाओं के रूप में होती है। इसका वर्ण श्याम, श्वेत, भूरा, पीला, लाल, नीला व चितकबरा भी होता है।

इसका शरीर भारी, टांगे छोटी तथा मोटी होती हैं। इसके पिछले पैरों में गेंडे की भांति तीन पदागुलियां तथा अगले पैरों में चार पदागुलियां होती हैं। थूथन सूंड की तरह होता है। आँखें छोटी और कान अण्डाकार होते हैं। पूँछ चौड़ी होती है। काले वर्ण 'टापिर' की पूँछ अक्सर आधी कटी हुई होती है।

दक्षिण अमेरिका में जो 'टापिर' पाये जाते हैं उनमें जंगली गैंडे तथा पूर्वकालीन विलुप्त घोड़ों के लक्षण पाए जाते हैं। अक्सर एक ही जाति के टापिर अपने झुंड में रहते हैं। दूर से देखने पर इनके शरीर की चित्रकारी बहुत सुन्दर प्रतीत होती है।

यह काफी डरपोक होता है। थोड़ी-सी आहट पाते ही यह चौकन्ना हो जाता है तथा उछल-उछलकर इधर-उधर देखता रहता है क्योंकि कई लोग इसकी खाल के लिए इसका शिकार करते हैं। इसकी खाल बड़ी कीमती होती है। इससे सर्द मौसम के कोट तैयार किये जाते हैं।

यह संगीत प्रेमी भी है। संगीत की मधुर धुन सुनकर यह खुशी से इधर-उधर झूमने-थिरकने लगता है।

दक्षिण अमेरिका के 'टिनो' जाति के टा. पिर बड़े गुस्सैले होते हैं। गुस्सा आने पर ये अपनी आँखों का रंग लाल कर लेते हैं तथा इधर-उधर तेजी से दौड़ने लगते हैं। कई बार ये मनुष्य व अन्य जानवरों को भी अपने पैरों से रौंद डालते हैं।

कविता : ऋषभ श्रीवास्तव

हम आगे बढ़ते जाएंगे

बाधाओं से कभी न डरेंगे,
हम नित आगे बढ़ते जाएंगे।
लक्ष्य भले ही होगा मुश्किल,
हासिल कर उसे दिखाएंगे।।

काम आज का जो भी होगा,
हम क्रम से पूरा करते जाएंगे।
कल पर यदि हमने छोड़ दिया,
तो निश्चित है हम पछताएंगे।।

पढ़-लिखकर घर समाज का,
इक दिन नाम खूब चमकाएंगे।
हम पर भारतवासी गर्व करेंगे,
ऐसा हम हिंदुस्तान बनाएंगे।।

कमजोरों का हम बनेंगे सहारा,
तम मिटाकर प्रकाश फैलाएंगे।
आत्मबल हम करें खूब मजबूत,
उन्नति के शिखर पर चढ़ जाएंगे।।

तूफानों से न होंगे कभी भयभीत,
हम धैर्य रख कदम बढ़ाते जाएंगे।
सत्यपथ से यदि नहीं होंगे विचलित,
हम जीवन में नित खुशियां पाएंगे।।

ऐतिहासिक प्रसंग : दिनेश जैन

बदला और बलिदान

बात उस समय की है जब दक्षिण भारत के सोमनाथ मन्दिर को लूटकर सुल्तान महमूद गजनवी वापस लौट रहा था। उसने लूट का बहुत-सा धन ऊँटों और घोड़ों पर लादा हुआ था। बहुत से सैनिक, घोड़ों पर व पैदल थे। बीच में सुरक्षित सैनिकों के साथ वह चल रहा था।

उसने सुना कि मार्ग के राजपूत राजा उससे सोमनाथ का बदला लेने की योजनाएं बना रहे हैं। उसका मुँह पीला पड़ गया। उसने अपने काफिले को सिंध की ओर मोड़ दिया। वहाँ भी सिंध नरेश ने उसका मार्ग रोक लिया। तब घबराकर वह कच्छ की ओर मुड़ गया किन्तु वहाँ भी जब कच्छ के जागीरदारों ने तलवारों से उसका स्वागत किया तो विवश होकर वह महारण (राजस्थान) में घुस पड़ा। महारण में उन्हें न तो वनस्पति मिली न ही पानी। तीन सौ मील तक चारों ओर रेत ही रेत। सुल्तान का काफिला इन अनजान राहों में पथ-भ्रष्ट हो गया और इधर-उधर भटकने लगा।

महारण के मध्य में एक छोटा-सा देवी का मन्दिर था। उसके पास ही दो-तीन टूटी-फूटी सी झोंपड़ियां थीं। इन्हीं में से एक झोंपड़ी के आगे एक युवक खड़ा था। सुल्तान की फौजों

को वह देख रहा था। भूखी-प्यासी फौज इसी ओर बढ़ी आ रही थी।

''कौन है तू? कहाँ रहता है?'' युवक ने देखा एक घुड़सवार सैनिक उसके सामने खड़ा पूछ रहा है।

''मैं? मैं भूमिया हूँ, यही महारण में रहता हूँ।''

''यहाँ के रास्ते जानता है, हमें रास्ते दिखा सकता है।''

''हाँ, हाँ, क्यों नहीं।''

''तो चल हमारे साथ और यह ले तेरी उजरत (मेहनताना)'' कहते हुए उसने मोहरों से भरी एक थैली उस युवक के सामने फेंकी।

''कितने दिन की राह है?'' सैनिक ने पूछा।

''यही कोई दस-बारह दिन की।'' उसने कहा और वह युवक रास्ता दिखाने के लिये महमूद के काफिले के पास चला गया।

महमूद का काफिला आगे बढ़ा, सबसे आगे वही युवक था। काफिला चलता गया-चलता गया। पूरे पन्द्रह दिन बीत गये। किन्तु रेगिस्तान का कोई अन्त नजर नहीं आ रहा था। सुल्तान की सेनाएं भूख और प्यास से अधमरी हो रही थीं।

''कब तक हम इस रेत के समुन्दर से पार हो सकेंगे अजनबी।'' महमूद ने हताश स्वर में पूछा।

''कभी नहीं सुल्तान।'' युवक ने अपनी ऊँटनी को रोका और नीचे उतरते हुए कहा।

''क्या कहा, तू जानता है, मैं कौन हूँ?'' महमूद चौंक पड़ा।

''गजनी के सुल्तान महमूद को भला कौन नहीं जानता।'' युवक ने अपनी मस्ती में उत्तर दिया। वह आगे बोला– ''जिसने कोटि-कोटि भारतीयों की धार्मिक भावनाओं को आहत कर अपने पैरों तले रौंदकर भगवान सोमनाथ के पावन ज्योतिर्लिंग को खण्डित किया है। उसे भला कौन ऐसा भारतीय होगा जो नहीं जानता।''

''तू कौन है?'' महमूद चीख पड़ा।

''मैं?'' युवक ने हँसते हुए उत्तर दिया। ''मैं भगवान सोमनाथ का एक अकिंचन पुजारी। मैं मरने से नहीं डरता महमूद। मैंने तुझसे सोमनाथ के अपमान का बदला लिया है, अब तुम इसी रेगिस्तान में भटकते हुए मरोगे।''

युवक का वाक्य अभी पूरा भी नहीं हो पाया था कि महमूद और उसके सैनिकों की चमचमाती कई तलवारें एक साथ उसके शरीर पर पड़ीं और वह टुकड़े-टुकड़े होकर वहीं मरुभूमि में बिखर गया। महमूद किंकर्तव्यविमूढ़ सा खड़ा अपने सामने दूर-दूर तक फैले हुए रेगिस्तान को देख रहा था।

ऐसे ही जीवन के निर्मोही व्यक्तियों ने ही भारत के गौरवशाली इतिहास का निर्माण किया है। हमें सदा ऐसे वीर पुरुषों पर गर्व रहेगा।

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : चन्द्रमा पर किसी वस्तु का भार कम क्यों होता है?

उत्तर : पृथ्वी प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है। इस कार्य के लिए पृथ्वी को कुछ बल लगाना पड़ता है। यही बल वस्तु का भार कहलाता है। जब कोई भी वस्तु चन्द्रमा पर होती है तो उसका भार चन्द्रमा के आकर्षण-बल का छठा भाग होता है। यही कारण है कि चन्द्रमा पर किसी वस्तु का भार कम अर्थात् पृथ्वी पर वस्तु के भार का 1/6 भाग हो जाता है।

प्रश्न : वृक्ष की शाखाओ को हिलाने पर फल जमीन पर ही गिरते हैं, ऊपर क्यों नहीं जाते?

उत्तर : पृथ्वी प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है। पृथ्वी के इस आकर्षण-बल का नाम गुरुत्वाकर्षण भी है। चन्द्रमा की तुलना में पृथ्वी का आकर्षण-बल 6 गुणा अधिक होता है। जब तुम वृक्ष की शाखाओं को हिलाते हो तो फल शाखाओं से टूटकर अलग हो जाते हैं। इन फलों को पृथ्वी गुरुत्वाकर्षण के कारण अपनी ओर खींच लेती है। ये फल ऊपर की ओर इसलिए नहीं जाते क्योंकि चन्द्रमा का आकर्षण-बल पृथ्वी से कम है तथा वह इसे प्रभावित नहीं कर पाता।

प्रश्न : फैलाकर डालने से गीले कपड़े जल्दी क्यों सूख जाते हैं?

उत्तर : वाष्पीकरण की गति उसके तल पर निर्भर करती है। गीले कपड़ों में पानी होता है। जब कपड़ों को फैला दिया जाता है तो वाष्पीकरण खुले तल पर होता है जिससे वाष्पीकरण की गति बढ़ जाती है। इसी कारण से गीले कपड़े फैलाकर डाले जाते हैं ताकि वे शीघ्र सूख सकें।

प्रेरक-प्रसंग : जैकी दुल्हानी

अन्न का आदर करें

सम्राट विक्रमादित्य अपने लाव-लश्कर के साथ एक बार कहीं जा रहे थे। उनकी सवारी जब धान मण्डी से गुजर रही थी। तो सम्राट ने देखा कि जमीन पर अनाज के दानें बिखरे पड़े हैं। देखकर वे हाथी से उतर गये और खुश होकर बोले– वाह! जमीन पर इतने सारे हीरे बिखरे पड़े हुए हैं। यह कहकर वे अनाज के दानों को अपने हाथों से बिनने लगे। उन्हें ऐसा करते देखकर मंत्री और अन्य लोग भी बिखरे हुए उस अनाज को बटोरने लगे। देखते ही देखते अनाज के उन दानों से सम्राट और अन्य लोगों की झोली भर गई।

फिर सबको सम्बोधित करते हुए वे बोले– हमारे राज्य में अनाज की कमी का एक बड़ा कारण उसकी बर्बादी तथा अनादर है। कम से कम आठ-दस लोगों का पेट तो इससे भर ही जायेगा जबकि हम इसे अपने पैरों तले रौंद रहे थे।

कहते हैं सम्राट विक्रमादित्य के शासन काल में उनके राज्य में अनाज की कमी नहीं रही।

आइए! प्रण करें कि हम किसी भी खाद्यान्न की बर्बादी और अपव्यय न करें ताकि हमारे भंडार भरे रहें और हम खुशहाल जिन्दगी जी सकें।

सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सत्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी | पंजाबी | अंग्रेजी | मराठी | नेपाली | गुजराती | बांग्ला | तमिल | तेलुगू | कन्नड | ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

एक नज़र

स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

एक नज़र

निरंकार पर दृढ़ विश्वास रखें और भक्ति मार्ग पर आगे बढ़ें

निरंकारी बाबा सुखचन सिंह मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट

74वाँ निरंकारी सन्त-समागम 27, 28 व 29 नवम्बर 2021 को

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

बाल गीत : प्रो. शरद नारायण

बच्चो तुम

बच्चो, तुम सब अच्छे बनना,
बच्चो, तुम सब सच्चे बनना।
काँटों में भी खिलते रहना,
फूलों के गुलदस्ते बनना।।

बच्चो, सबसे हिल-मिल रहना,
बच्चो, तुम नदिया-सा बहना।
नहीं किसी से कभी झगड़ना,
बच्चो, दोस्त सभी के बनना।।

मानवता के पथ पर चलना,
किसी दूसरे को न खलना।
प्रेमभाव सबके संग रखना,
नहीं किसी के सुख से जलना।।

बच्चो, हर मुश्किल से लड़ना,
हरदम आगे-आगे बढ़ना।
बातें सब चोखी अपनाकर,
बच्चो, अच्छा जीवन गढ़ना।।

बाल कविता : हरिप्रसाद धर्मक

देश की तकदीर बनो

पढ़ो ध्यान से निश दिन बच्चो।
साथ सभी मिल खेलो बच्चो।

आपस में न लड़ा करो।
प्यार सभी से किया करो।

पढ़-लिखकर विद्वान बनोगे।
इक दिन तुम महान बनोगे।

गाँधी नेहरु सा बन जाओ।
देश हित कुछ काम में आओ।

तुम आजाद सुभाष बनो।
तुम भारत माँ की शान बनो।

प्रेरक-प्रसंग : सुकृति आहूजा

आम का पेड़

एक बच्चे को आम का पेड़ बहुत पसन्द था। जब भी फुर्सत मिलती वह आम के पेड़ के पास पहुँच जाता। पेड़ के ऊपर चढ़ता, आम खाता, खेलता और थक जाने पर उसी की छाया में सो जाता। बच्चे और आम के पेड़ के बीच एक अनोखा रिश्ता बन गया। प्रेम और अपनेपन वाला यह रिश्ता बहुत अनोखा था। समय बीतता गया, बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता गया। वैसे-वैसे उसने पेड़ के पास आना कम कर दिया। कुछ समय बाद तो उसका आना बिल्कुल ही बंद हो गया। बच्चे ने आना अवश्य कम कर दिया था पर आम का पेड़ आज भी उस बालक को याद कर अकेले में रोता रहता।

एक दिन अचानक पेड़ ने उस बच्चे को अपनी तरफ आते देखा और पास आने पर कहा, ''तू कहाँ चला गया था? मैं रोज तुझे याद किया करता था। चलो आज फिर से दोनों खेलते हैं।''

बच्चे ने आम के पेड़ से कहा, ''अब मेरी खेलने की उम्र नहीं है, मुझे पढ़ना है लेकिन किताबें खरीदने और फीस भरने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं।''

पेड़ ने कहा, ''तू मेरे आम लेकर बाजार में बेच दे, इससे जो पैसे मिलें उससे अपनी फीस भर देना और किताबें खरीद लेना।'' उस बच्चे ने आम के पेड़ से सारे आम तोड़ लिए और उन सब आमों को लेकर वहाँ से चला गया। उसके बाद वह फिर कभी दिखाई नहीं दिया। आम का पेड़ उसकी राह देखता रहता। एक दिन वह फिर आया और कहने लगा, ''अब मुझे नौकरी मिल गई है, मेरी शादी हो चुकी है, मुझे मेरा अपना घर बनाना है, इसके लिए मेरे पास अब पैसे नहीं हैं।''

आम के पेड़ ने कहा, ''तू मेरी सभी डालियों को काटकर ले जा, उससे अपना घर बना ले।'' उस जवान ने पेड़ की सभी डालियां काट लीं और लेकर चला गया।

आम के पेड़ के पास अब कुछ नहीं था वो अब बिल्कुल ठूंठ हो गया था। कोई उसे देखता भी नहीं था। पेड़ ने भी वह बालक जो अब जवान हो चुका था उसके पास फिर आयेगा यह उम्मीद छोड़ दी थी। फिर एक दिन अचानक वहाँ एक प्रौढ़ व्यक्ति आया। उसने आम के पेड़ से कहा, ''शायद आपने मुझे पहचाना नहीं, मैं वही बालक हूँ जो बार-बार आपके पास आता था और आप हमेशा अपने टुकड़े काटकर भी मेरी मदद करते थे।''

आम के पेड़ ने दुख के साथ कहा, ''पर बेटा, मेरे पास अब ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं तुम्हें दे सकूं।'' प्रौढ़ ने आँखों में आंसू लिए कहा, ''आज मैं आपसे कुछ लेने नहीं आया हूँ बल्कि आज तो मुझे आपके साथ जी भरके खेलना है, आपकी गोद में सिर रखकर सो जाना है।''

इतना कहकर वह आम के पेड़ से लिपट गया और आम के पेड़ की सूखी डाली फिर से अंकुरित हो उठी। वो आम का पेड़ कोई और नहीं हमारे माता-पिता हैं। दोस्तों! जब छोटे थे उनके साथ खेलना अच्छा लगता था। जैसे-जैसे बड़े होते चले गये उनसे दूर होते गये। पास भी तब आये जब कोई जरूरत पड़ी,

कोई समस्या खड़ी हुई। आज कई माँ-बाप उस शुष्क पेड़ की तरह अपने बच्चों की राह देख रहे हैं। जाकर उनसे लिपटें, उनके गले लग जायें। फिर देखना वृद्धावस्था में उनका जीवन फिर से अंकुरित हो उठेगा।

हमारी परम्पराओं ने हमें माता-पिता, दादा-दादी एवं बुजुर्गों से प्रेम करना सिखाया लेकिन हम उन उत्तम शिक्षाओं को भूला बैठे। अब भी समय है संभलने का, प्रेम लेने और प्रेम देने का और इस प्रकार अपने और अपने माता-पिता का सम्मान-सत्कार करने का। ◆

कभी न भूलो

❖ अवगुण नाव की पेंदी के छेद के समान हैं जो चाहे छोटा हो बड़ा, एक दिन उसे डुबो ही देगा। – **कालीदास**

❖ अवसर उनकी मदद कभी नहीं करता जो अपनी मदद नहीं करते। – **सफोक्लीज**

❖ अच्छा दिल सोने जैसा मूल्यवान होता है। – **शेक्सपियर**

❖ उस मनुष्य से अधिक कोई दरिद्र नहीं है जिसके पास सिर्फ पैसा ही है। – **एडविन**

❖ अतीत में जैसा भी कुछ कर्म किया गया है भविष्य में वह उसी रूप में उपस्थित होता है। – **महावीर स्वामी**

❖ समय और सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करती। – **रिचर्ड ब्रेथहेड**

❖ नीच की नम्रता से सावधान रहो। अंकुश, धनुष, साँप और बिल्ली झुककर ही वार करते हैं। – **वाल्मीकि**

❖ व्यक्ति अपने गुणों से ऊपर उठता है। ऊँचे स्थान पर बैठने से ऊँचा नहीं हो जाता है। – **चाणक्य**

❖ जब तक आप खुद पर विश्वास नहीं करते तब तक आप भगवान पर विश्वास नहीं कर सकते। – **स्वामी विवेकानंद**

❖ पहले वो आपको नजरअंदाज करेंगे फिर वो आप पर हँसेंगे फिर वो आपसे लड़ेंगे और फिर आप जीत जाएंगे। – **महात्मा गाँधी**

❖ कष्ट ही तो वह प्रेरक शक्ति है जो मनुष्य को कसौटी पर परखती है और आगे बढ़ाती है। – **सावरकर**

❖ यदि आप केवल मुस्कुराएंगे तो आप पाएंगे कि जीवन अभी भी मूल्यवान है। – **चार्ली चैपलिन**

❖ समस्याओं से नजरें फेरने से वे घटती नहीं, बल्कि और बड़ी हो जाती हैं। – **लीकर**

❖ छोटे मन (विचार) से कोई बड़ा नहीं होता, टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता। – **अटल बिहारी वाजपेयी**

❖ असंतोष पराजय का दूसरा नाम है।

❖ बाधाएं व्यक्ति के कर्मों की कलम से लिखे जाते हैं।

❖ महापुरुषों की पहली पहचान उसकी विनम्रता है।

❖ सारे सद्‌गुण विनय के आधीन हैं।– **अज्ञात**

– **संकलन : जगतार 'चमन'**

बाल कविता : खुशी राणा

पृथ्वी दिवस
22 अप्रैल पर विशेष

मुझसे ही यह जग उपजा,
मुझमें ही सबका जीवन पलता।

मुझमें सब जीव हैं पलते,
सजीव हो या निर्जीव यहीं हैं रहते।

काले गोरे का भेद मैं नहीं जानती हूँ,
सभी प्राणियों को अपनी संतान मैं मानती हूँ।

कहने के लिए सब प्राणियों का घर हूँ मैं,
जो कभी खत्म न हो वो बेअनन्त सार हूँ मैं।

कविता : कल्पनाथ सिंह

हमें बता दो कोयल जी

हरदम कुहू-कुहू क्यों करती?
हमें बता दो कोयल जी।

मम्मी पापा को पुकारती,
या कि याद आती है नानी।
भूखी हो तो खाना दे दूं,
प्यासी हो तो दे दूं पानी।।

सच्ची बात क्यों नहीं कहती?
हमें बता दो कोयल जी।

डाली-डाली फुदक-फुदक कर,
खेलो कूदो नाचो गाओ।
कोई हो तकलीफ तुम्हें तो,
हमसे मन की बात बताओ।।

हम बच्चे हैं दोस्त तुम्हारे,
सच कहता हूँ कोयल जी।।

बाल कहानी : गोविन्द भारद्वाज

प्रकृति का नियम

एक खेत के पास विशाल पीपल का पेड़ था। खेत में कद्दू की बेलें थीं। जिनमें मोटे और बड़े-बड़े ढ़ेरों कद्दू लगे हुए थे। पीपल और कद्दुओं में जान-पहचान हो गई।

एक दिन पीपल बहुत उदास था। कद्दुओं ने जब पीपल को उदास देखा तो कद्दू ने पूछा– ''पीपल भैया आज आप उदास क्यों हो?''

''नहीं ... नहीं ... कोई विशेष बात नहीं है।'' पीपल ने उदास मन से उत्तर दिया।

कद्दू बोला– ''आप तो सदा हँसते-मुस्कुराते रहते हो, आज कोई तो बात है।''

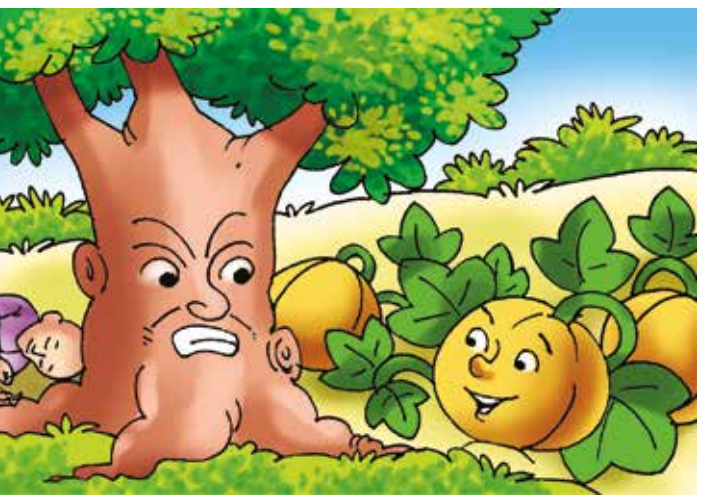

पीपल ने कहा– ''मैं इसलिए उदास हूँ कि मेरी काया तो इतनी विशाल है किन्तु मेरे फल बिल्कुल छोटे-छोटे। मुझे अपने आपसे घृणा सी हो गई है।''

''बात तो तुम ठीक कह रहे हो भैया। आपकी बात क्या? आप हमें ही देख लो। हम इतने मोटे और बड़े हैं जबकि हमारी बेल बिल्कुल कमजोर। जो अपने सहारे खड़ी भी नहीं हो सकती। हमें इन बेलों को देखकर शर्म आती है। हमको तो आप जैसे पेड़ों के फल होने चाहिए थे।'' कद्दू ने अपनी व्यथा सुनाते हुए कहा।

पीपल बोला– ''काश, तुम मेरी शाखाओं पर लटके हुए होते और मेरे ये नन्हें-नन्हें फल तुम्हारी बेलों पर।'' उस पीपल के पेड़ के नीचे एक महात्मा आराम कर रहे थे। उन्होंने कद्दू और पीपल की बात सुन ली। वे उठकर पीपल से बोले– ''पीपल भैया, तुम्हारे मन की बात मैंने सुन ली। किन्तु भैया ईश्वर ने प्रत्येक पेड़-पौधे, जीव-जन्तुओं को बड़ा सोच-समझकर बनाया है इसमें हम सबकी भलाई छिपी रहती है।''

''कैसी भलाई महाराज? कम से कम उनके आकार-प्रकार, कद-काठी का तो ईश्वर को ध्यान रखना चाहिए था।'' पीपल ने ईश्वर को कोसते हुए कहा।

कद्दू भी बिना बोले नहीं रहा। वह बोला– ''भलाई-वलाई कुछ नहीं महाराज, ये तो ईश्वर का अन्याय है।''

''नहीं कद्दू भाई ऐसा मत बोलो। ईश्वर हम सबका जन्मदाता है।'' महात्मा ने कद्दू से कहा।

पीपल ने महात्मा की आदर्श बात सुनकर कहा– ''महाराज! आप तो ईश्वर के उपासक हैं। आप हमें ऐसा वरदान क्यों नहीं देते जिससे मेरी शाखाओं पर कद्दू लटक जाएं और मेरे फल इन बेलों पर लग जाएं।''

''पीपल भैया प्रकृति के नियम को बदलना अन्याय है। वरदान तो मैं दे सकता हूँ किन्तु ईश्वर के कानून को बदलना हम सबके लिए हानिकारक हो सकता है।'' महात्मा जी ने समझाते हुए कहा।

''महाराज, हमारी हानि की चिन्ता कतई मत करो। कृपया आप हमें वरदान दे दो। मैं

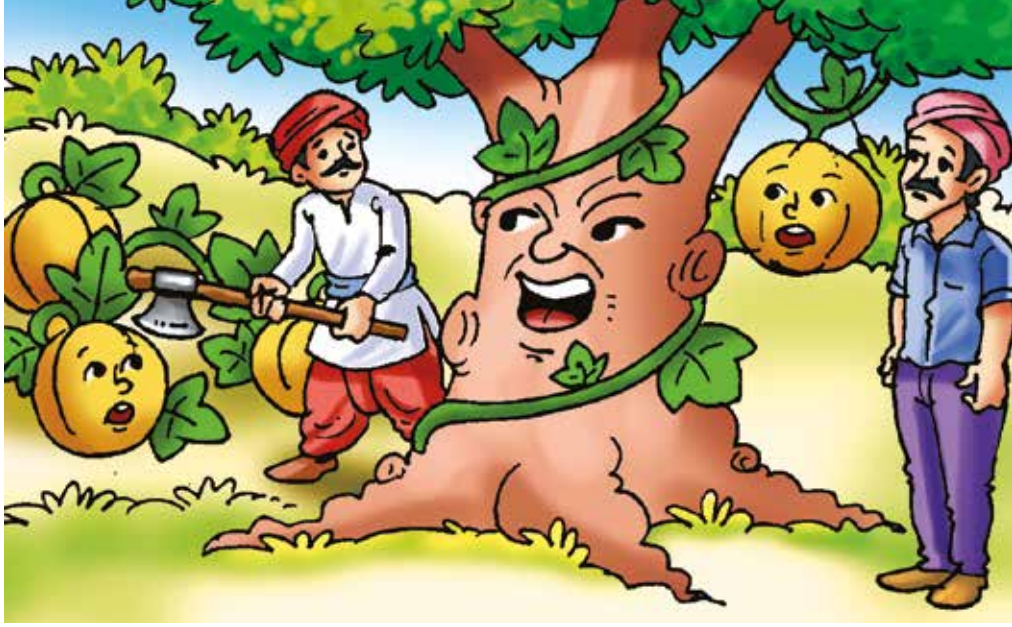

और कद्दू आपके सदा आभारी रहेंगे।'' पीपल ने प्रार्थना करते हुए कहा।

महात्मा जी को उन पर दया आ गई और आँखें बन्द करके प्रभु का ध्यान किया। थोड़ी ही देर में सब कुछ बदल गया। पीपल के पेड़ पर कद्दू लटक गये और बेलों पर पीपल के लाल-लाल छोटे-छोटे फल। पीपल और कद्दू बड़े खुश हुए और बोले– ''अब आएगा मजा। जब मिल बैठेंगे बराबर के यार।''

महात्मा को उन्होंने धन्यवाद दिया। महात्मा थोड़ी देर विश्राम करके प्रस्थान कर गये। दूसरे दिन जब किसान मंडी में बेचने के लिए कद्दुओं को तोड़ने आया तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि मेरे खेत की फसल खराब हो गई। अत: इन बेलों को उखाड़ने में ही भलाई है। उसने सारी बेलों को जड़ से हटा दिया और दूसरी फसल बोने का निर्णय कर लिया।

उधर आते-जाते यात्री परेशान। क्योंकि जो भी पीपल के नीचे आराम करता उसी पर कद्दू टूटकर गिर जाता। वे घायल होने लगे। एक दिन एक बढ़ई वहाँ से गुजरा। एक बड़ा-सा कद्दू बढ़ई के ऊपर आकर गिरा। उसका सिर फूट गया। उसने गाँववालों को कद्दू की घटना बताई। सारे गाँववालों ने उस पीपल को भूतवाला समझकर काटने का निर्णय ले लिया। अगले दिन बढ़ई अपने कुछ साथियों के साथ आया और पीपल को काटने लगा। पीपल बड़ा दु:खी हुआ। उसने कद्दू को भला-बुरा कहा तो कद्दुओं ने भी कहा कि तुम्हारे कारण तो किसान ने हमारी बेलें ही काट दीं। दोनों में जोर-जोर से तकरार शुरू हो गई।

उसी समय वही महात्मा पीपल को आता हुआ दिखाई दिया। वह जोर से चिल्लाया। महात्मा ने पीपल की आवाज सुन ली। वे उसके पास आये। महात्मा बढ़ई को देखकर समझ गये कि पीपल को क्यों काटा जा रहा है। पीपल रुआंसा होकर बोला– ''महाराज! मुझे बचाओ।''

महात्मा बोले– ''भैया मैंने तो पहले ही कहा था कि प्रकृति के नियम के विरुद्ध कोई काम करोगे तो हानि होगी।''

''मुझे तो वे नन्हें-नन्हें फल ही लौटा दो, वरना ये मुझे जड़ से काट डालेंगे।'' पीपल ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

कद्दू भी बोले– ''महाराज! हमें भी क्षमा करें और इस पीपल को अवश्य बचा लो वरना हमारी गलती के कारण पेड़ पर रहने वाले पक्षियों के घर बर्बाद हो जायेंगे।''

महात्मा ने अपनी दिव्यशक्ति के द्वारा फिर से पीपल को छोटे-छोटे फलों से लाद दिया। कद्दू अपना अस्तित्व खो चुके थे। महात्मा ने बढ़ई को समझा दिया। अब पीपल अपने छोटे फलों के साथ खुश था।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : विकास कुमार

किट्टी और उसके दोस्त खेलने लगते हैं।
कुछ देर बाद पार्क में एक बूढ़ी गाय श्यामा आई, जो छड़ी के सहारे चल रही थी। बूढ़ी श्यामा को देखकर किट्टी को शरारत सूझी और किट्टी उसके पास गई।
किट्टी बूढ़ी गाय श्यामा की छड़ी छीनकर उन्हें परेशान करने लगी।
बेटी मेरी छड़ी वापस कर दो।

किट्टी, आंटी की छड़ी वापस कर दो!
किट्टी गुस्से में छड़ी कीचड़ में फेंक देती है।
लो, अब ले लो!
पार्क से गुजरती हुई किट्टी की मम्मी किट्टी और उसके दोस्तों को देखकर उनके पास आती है।
यहाँ क्या हो रहा है?

आंटी किट्टी ने श्यामा आंटी की छड़ी कीचड़ में फेंक दी।
किट्टी तुम्हारी हरकत बहुत गलत है, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। हमें अपने से बड़ों का सदैव सम्मान करना चाहिए ना कि उन्हें परेशान! तुम आंटी को नई छड़ी ला कर दो और उनसे माफी मांगो।
अगले दिन
आंटी जी, ये आपके लिए नई छड़ी और मेरी कल की शरारत के लिए मुझे माफ कर दो।
कोई बात नहीं बेटा, आगे से ऐसा नहीं करना।
जी, आंटी जी। आगे से मैं कभी शरारत नहीं करूंगी।

विचित्र संयोग

सत्तरहवीं सदी की बात है। पोलैंड में सोविस्की नामक राजा राज्य करता था। उसका जन्म 17 जून को हुआ था। 17 जून को ही वह गद्दी पर बैठा। उसकी शादी भी 17 जून को ही हुई थी। दुर्भाग्यवश उसकी मृत्यु भी 17 जून को ही हुई।

कैलिफोर्निया (अमेरिका) की एक महिला थी। नाम था केथेन कन्सन। उसने 20 अप्रैल 1957 को अपनी पहली लड़की को जन्म दिया। दूसरी लड़की ने 20 अप्रैल 1958 को और तीसरी ने 20 अप्रैल 1960 को जन्म लिया। संयोग कुछ ऐसा रहा कि चौथी लड़की भी 20 अप्रैल 1961 को ही इस संसार में आई।

5 दिसम्बर सन् 1664 की बात है। मेनाई जलडमरु मध्य में एक नाव उलट गई। उसमें बैठे 81 यात्रियों में से 80 यात्री मर गये। केवल एक यात्री बचा। उसका नाम था– ह्यू विलियम्स।

उसी जगह 5 दिसम्बर 1785 को फिर एक तूफान में 60 आदमियों से लदी एक नाव उलट गई। एक बार फिर ह्यू विलियम्स नामक व्यक्ति ही किसी तरह जल में डूबने से बच गया।

5 अगस्त 1820 में भी एक नाव डूबी। उसमें कुल 25 सवारियां थीं। दुर्घटना का स्थान भी वही मेनाई जलडमरु ही था। संयोगवश एक आदमी जीवित बच गया। इत्तिफाक से जो व्यक्ति जीवित बचा था उसका नाम भी ह्यू विलियम्स ही था।

प्रथम अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन की मृत्यु सन् 1799 यानी अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्ष के अन्तिम महीने (दिसम्बर) के अन्तिम सप्ताह के अन्तिम दिन (31 तारीख) के अन्तिम घंटे में हुई थी।

इसी तरह लाल बहादुर शास्त्री जी के साथ मंगलवार का संयोग विचित्र ही रहा। वह मंगलवार को पैदा हुए थे। मंगलवार के दिन हुई थी उनकी शादी। मंत्री और प्रधानमंत्री की शपथ भी मंगलवार को ग्रहण करने वाले इस महापुरुष की मृत्यु भी संयोग से मंगलवार के दिन ही हुई।

प्रस्तुति : उमाशंकर यादव

पुस्तकें और उनके लेखक

रामायण	:	महर्षि वाल्मीकि
महाभारत	:	महर्षि वेदव्यास
रामचरितमानस	:	तुलसीदास
सत्यार्थ प्रकाश	:	स्वामी दयानन्द
सूरसागर	:	सूरदास
गीतांजलि	:	रविन्द्रनाथ टैगोर
डिस्कवरी ऑफ इंडिया	:	जवाहरलाल नेहरु
गोदान	:	मुंशी प्रेमचन्द
अर्थशास्त्र	:	कौटिल्य
बीजक (कविता संग्रह)	:	कबीरदास
गीत गोविन्द	:	जयदेव

प्रेरक-प्रसंग : सुमेश निषाद

राह दिखाई दुनिया को माँ के प्यार ने

व्यक्ति की सबसे बड़ी कमजोरी हार मान लेना है। सफल होने के लिए कठिन परिश्रम और बार-बार प्रयास करना आवश्यक होता है।

विश्व के महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडीसन बहुत मेहनती थे। बचपन में उन्हें विद्यालय से यह कहकर निकाल दिया गया था कि वे मन्दबुद्धि बालक हैं। निराशा की अवस्था में उनकी माँ ने उनकी अवस्था को समझा और प्यार के साथ यही समझाया कि जीवन में तुम्हें आगे बढ़ना है जो हो गया उसे भूल जाओ और सफलता के लिए नये सिरे से प्रयास करो।

थॉमस अल्वा एडीसन का जन्म 11 फरवरी 1847 को मिलान, ओहियो, अमेरिका में हुआ। उन्होंने इलेक्ट्रिक पॉवर जेनरेशन, मास कम्यूनिकेशन, साउंड रिकार्डिंग और मोशन पिक्चर के क्षेत्र में महत्वपूर्ण खोज की और प्रख्यात अमेरिकी आविष्कारक तथा व्यवसायी के रूप में प्रसिद्ध हुए।

एडीसन को लिखने-पढ़ने और गणित की आरंभिक शिक्षा उनकी माँ से प्राप्त हुई जो एक स्कूल टीचर थीं। उनकी रूचि टेक्नालॉजी और नई खोजों के प्रति इतनी ज्यादा थी कि वे घंटों प्रयोग करने में

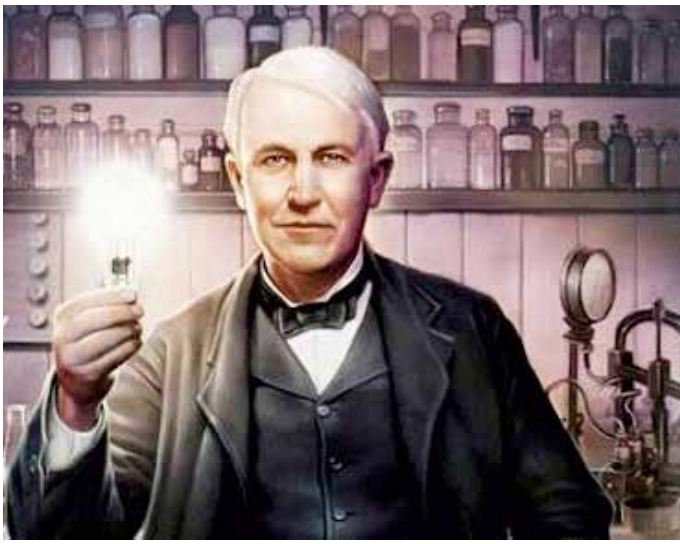

व्यस्त रहते थे। एडीसन महान आविष्कारक और मानव जीवन में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाले प्रमाणित हुए। फोनोग्राफ और विद्युत बल्ब का आविष्कार करके मानो उन्होंने सारी दुनिया ही बदल दी। अमेरिका में उन्होंने अकेले 1093 पेटेन्ट कराए और विश्व के महान आविष्कारकों में सुमार हुए। उनकी जिज्ञासा बहुत प्रबल थी और यही उनके आविष्कारों को संसार के सामने लाने का आधार बना। 10 वर्ष की आयु होने तक वे ह्यूम, सीअर, बर्टन तथा गिबन के महान ग्रन्थों तथा डिक्शनरी आफ सांइसेज का अध्ययन कर चुके थे। 12 वर्ष के एडीसन फलों व समाचार पत्रों के विक्रय से एक डालर प्रतिदिन की सहायता अपने

परिवार को देने लगे थे। 20 वर्ष की आयु तक उन्होंने टेलीग्राफ कर्मचारी के रूप में नौकरी की। नौकरी से बचे समय को वह वैज्ञानिक प्रयोग और परीक्षण में लगाते थे। समय का सर्वोत्तम उपयोग करना उनको अच्छी तरह आता था।

1870 से 1876 के बीच एडीसन ने अनेक महत्वपूर्ण आविष्कार किए। एक ही तार पर अलग-अलग कई सन्देश भेजने की विधि खोजी। स्टॉक एक्सचेंज के लिए तार छापने की मशीन को सुधारा और बेल टेलीफोन यंत्र का विकास किया। 1875 में 'ईथरीय बल' पर महत्वपूर्ण खोज की। उनके द्वारा बनाई गई फोनोग्राफ मशीन उस समय की अनूठी खोज थी जो अनेक सुधारों से गुजरती हुई अत्यन्त उपयोगी बनी।

एडीसन ने ऐसा बल्ब बनाया जिसके अन्दर कोई गैस नहीं थी अर्थात् निर्वात था। वह बल्ब जब लगातार 40 घंटे तक जलता रहा तो एडीसन का उत्साह बहुत बढ़ गया। उन्होंने 1883 में 'एडीसन प्रभाव' की खोज की जो वर्तमान 'रेडियो वाल्व' के रूप में विकसित हुआ। उन्होंने जमीन के नीचे बिजली का तार बिछाने के बारे में सोचा और उस तार का आविष्कार किया। प्रकाश, ऊष्मा और शक्ति के बारे में उनकी खोज लगातार जारी रही। उन्होंने विद्युत डायनेमो और मोटर में पर्याप्त सुधार किए। विद्युत से चलने वाली माल ढोने वाली रेलगाड़ी तथा चलते जहाज से संदेश भेजने व प्राप्त करने की विधि का आविष्कार करके उन्होंने महान कार्य किया। 1891 में उन्होंने चलचित्र कैमरा का पेटेन्ट कराया और इन्हें प्रदर्शित करने के लिए 'किनैटोस्कोप' का आविष्कार किया। मेनलो पार्क और वेस्ट ऑरेन्ज के कारखानों में एडीसन ने 50 वर्षों तक अथक परिश्रम किया और सैंकड़ो आविष्कार किए। 18 अक्टूबर 1931 को यह महान वैज्ञानिक संसार से विदा हो गया।

उनके जीवन से प्रेरणा लेकर कितने ही लोगों ने जीवन में सफलताएं पाई। महान व्यक्तित्व अपने परिश्रम, लगन, धीरज और कर्तव्यनिष्ठा से ऐसी मिसाल बन जाते हैं कि सदियां उनके कार्यों को याद करती हैं।

कविता : कमलसिंह चौहान

माता-पिता की सेवा

खिलते जाओ फूलों जैसे,
बहते जाओ नदियों जैसे।
राम कृष्ण गौतम की धरती,
मिलते जाओ पानी जैसे।।

माता-पिता की कर लो सेवा,
गुरु भक्ति से पा लो मेवा।
युगपुरुषों सा त्याग करो तुम,
प्रताप शिवा का कर्म हो जैसे।।

पौधों सा तुम बढ़ना सीखो,
कठिन डगर पर चलना सीखो।
घबराओ मत तुम कांटो से,
शूलों के संग फूल हो जैसे।।

मधुमक्खी सा मिलना सीखो,
शेर चाल की चलना सीखो।
कोयल की प्यारी बोली बोलो,
सदा भारत माँ की जय बोलो।।

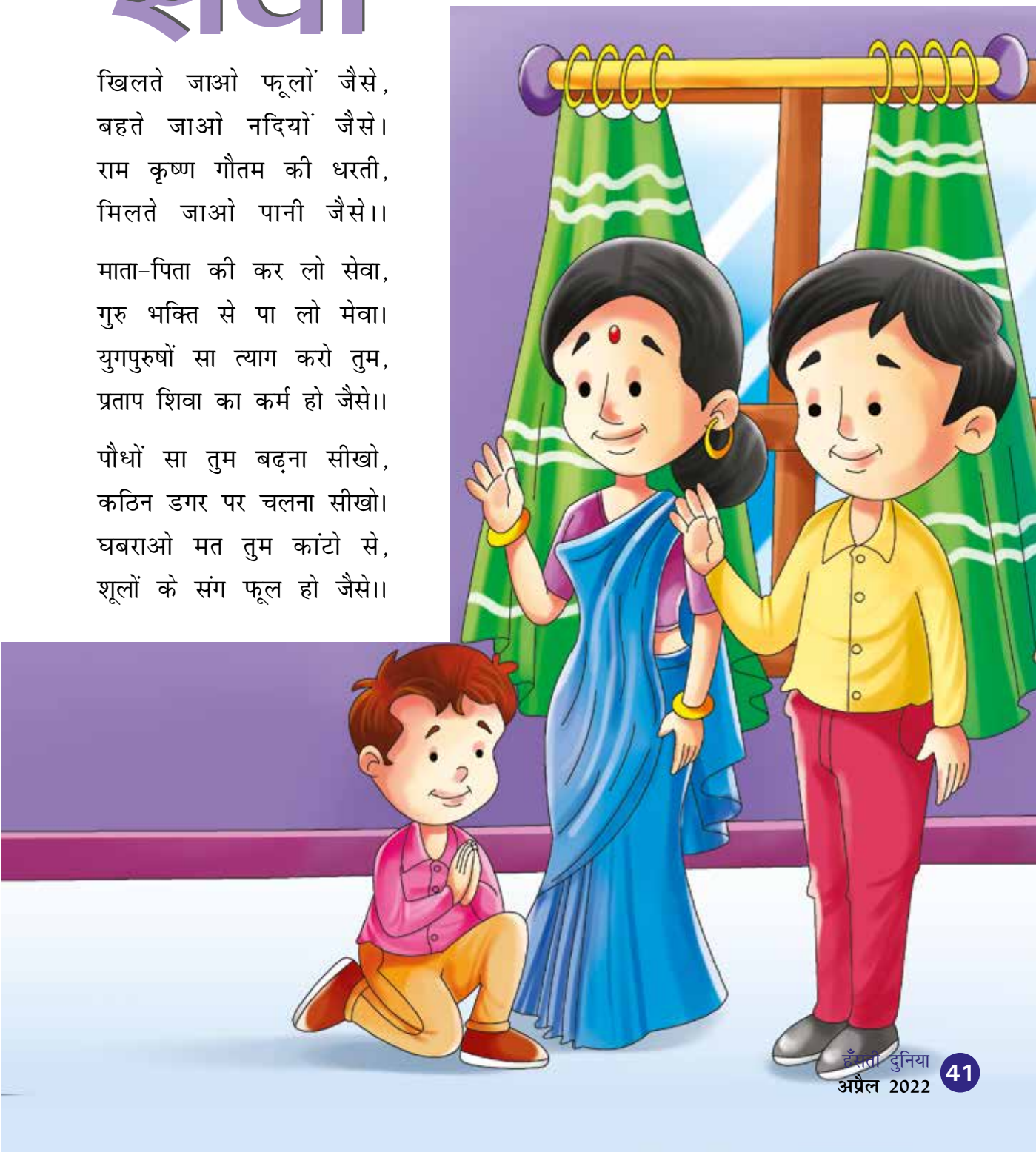

विशेष लेख : फेनम सोगानी

अनोखा जीव
हार्पसील

हार्पसील आर्कटिक सर्किल के कुछ हिस्सों में व ग्रीनलैंड से उत्तर पूर्वी कनाडा तक पाई जाती है। यह जीव करीब 2-3 मीटर लम्बा व 125-150 किलोग्राम तक भारी होता है। हार्पसील की खाल पीलापन लिए हुए सफेद रंग की अथवा स्लेटी रंग लिए हुए पीली होती है। इसके शरीर पर कंधे से पूँछ तक भूरे या काले रंग के धब्बे होते हैं। सिर व थूथन प्रायः गहरे रंग की होती है। इसके शरीर से एक अजीब तरह की गंध भी आती है।

वैसे मादा हार्पसील नर हार्पसील की अपेक्षा छोटी व हल्के रंग की होती है। हार्पसील का शरीर लम्बा व हाथ-पैर चप्पूनुमा होते हैं जिस कारण वह कुशल तैराक होती है परन्तु भूमि अथवा समुद्री बर्फ पर चलने में उसे बहुत कठिनाई होती है और वह मुश्किल से अपने छोटे-छोटे हाथ-पैरों की सहायता से रेंग पाती है। हार्पसील अधिकतर मछलियां एवं क्रस्टेशियस जीवों (पपड़ीदार चमड़ी वाले जीव जैसे केकड़े) को जो समुद्र में 180 मीटर तक की गहराई में मिलते हैं को अपना भोजन बनाती है।

बसन्त के मौसम में हार्पसील एक या दो बच्चों को जन्म देती है। नर हार्पसील अपने नवजात शिशुओं की रक्षा बड़े चौकन्ने होकर

करता है तथा अपनी मादा के लिए समुद्र के गहरे हिस्सों से कुछ खास तरह की खुराक लेकर आता है।

इनके छोटे बच्चे हवा के स्पर्श के साथ धीरे-धीरे लम्बे होने लगते हैं। पूरे एक महीने के सफर में तो वे ढाई तीन फुट लम्बे हो जाते हैं।

उत्तरी पूर्वी कनाडा में हार्पसील का वर्ण मोर की गर्दन की तरह नीला होता है तथा रात्रि में इसका शरीर कुदरती चमकता रहता है। यहाँ इसकी कुछ भिन्न-भिन्न प्रजातियां भी हैं। जिनके शरीर के रंग भी पृथक-पृथक हैं। हाँ, एक ही वर्ण की कई-कई हार्पसीलें सदा समूह में रहती हैं तथा एक दूजे की रक्षा बड़ी तरकीब से करती हैं।

हार्पसील की कुछ प्रजातियां सींग वाली होती हैं। इनके मुख पर डेढ़ से दो फुट लम्बे नरम मुलायम सींग रहते हैं। इन सींगों से ये अपनी रक्षा भी करती हैं तथा हल्के-फुल्के शिकार भी कर लेती हैं। ये सुबह तथा सांझ को अपने मुख से बड़े-बड़े झाग निकालती हैं। ये झाग पानी की सतह पर बुलबुले की तरह दूर तक बहते रहते हैं। दूर से देखने पर ये रूई की गेंद की तरह दिखाई देते हैं। कई मछलियां इन झाग से बने बुलबुलों को बड़े चाव से खाती हैं क्योंकि इनमें दूध की मात्रा होती है। कई बार तो समूह की हार्पसीलें इतने झाग जलाशयों में छोड़ती हैं कि उनका पानी सफेद दूध की भांति दिखाई देने लगता है।

पढ़ो और हँसो

पति-पत्नी स्टेशन पर खड़े ट्रेन का इंतजार कर रहे थे।

तभी एक ट्रेन आई जिस पर लिखा था– 'बॉम्बे मेल'।

पति भागकर ट्रेन में चढ़ गया और पत्नी से बोला– जब 'बॉम्बे फीमेल' आए तो तुम भी चढ़ जाना।

एक व्यक्ति पार्किंग में अपनी कार के पहिए निकाल रहा था।

बंटी : ओए ये क्या कर रहा है?

व्यक्ति : कार के दो पहिये निकाल रहा हूँ।

बंटी : लेकिन तू पहिये क्यों निकाल रहा है? ये तो देखने में ठीक लग रहे हैं।

व्यक्ति : देख नहीं रहा, यहाँ लिखा है, 'ओनली टू व्हीलर पार्किंग।'।

– प्रमोद कुमार मिश्रा (आज़मगढ)

मोहन : यार मैं अपना पर्स घर भूल आया हूँ, मुझे 100 रुपये की जरूरत है।

सोहन : कोई बात नहीं। एक दोस्त ही दोस्त के काम आता है। ये लो 10 रुपये। घर जाकर अपना पर्स ले आओ।

डाकू शेर सिंह मोटूराम के घर में घुस गया।

डाकू : सोना कहाँ है, जल्दी बताओ।

मोटू : पूरा घर खाली है, जहाँ सोना चाहते हो सो जाओ।

रिंग मास्टर : (सर्कस के कर्मचारी से) तुमने शेर के बाड़े में ताला क्यों नहीं लगाया?

कर्मचारी : क्या जरूरत है सर। इतने खतरनाक जानवर को कौन चोरी करेगा।

एक पोस्टमैन की नियुक्ति करनी थी। उम्मीदवार से पूछा गया कि सूर्य से धरती कितनी दूर है?

उम्मीदवार बोला– सर! अगर आप मुझे इस रूट पर भेजना चाहते हैं तो मुझे यह नौकरी नहीं चाहिए।

एक सेठ कार में जा रहा था। अचानक उसे धक्का लगा तो उसने ड्राईवर से पूछा– धक्का क्यों लगा?

ड्राईवर बोला : सेठ जी। पत्थर सामने आ गया।

सेठ : बहुत बेवकूफ हो, तुमने हॉर्न क्यों नहीं बजाया।

– गीतू खनेजा (कलानौर)

ड्राईवर : मैडम, पैट्रोल खत्म हो गया है, गाड़ी आगे नहीं जा सकती।
मैडम : फिर वापस घर ले चलो।

लक्की : (अपने मामा से) मामा जी, आप कैसे नहाते हैं?
मामा : जैसे तुम नहाते हो।
लक्की : अच्छा तो आप भी मेरी तरह नहाते समय रोते हो।

अंतरिक्ष का एक विज्ञानी लम्बी दूरी तक देख सकने वाली अपनी दूरबीन की सहायता से सितारों को देख रहा था।

इस दौरान साइंस लेबोरेटरी के चौकीदार ने आकाश पर एक तारा टूटता देखा तो वैज्ञानिक की तरफ देख कर बोला– मान गए सर, आपने क्या शानदार निशाना लगाया है।

राजू ड्राइंगरूम में बैठकर 'ड्राइंग' बना रहा था। उसकी मम्मी ने गुस्से में आकर राजू से कहा– ये जगह ड्राइंग (चित्र) बनाने की नहीं है।
राजू बोला– मम्मी जी ये ड्राइंगरूम है इसलिए तो मैं यहाँ ड्राइंग कर रहा हूँ।

साहब : (नौकर से) किसी का फोन आये तो बोल देना साहब घर पर नहीं है।
(थोड़ी देर बाद घंटी बजती है, आवाज़ आती है – हैलो! साहब घर पर हैं?)
नौकर : साहब ने कहा है कि बोल देना हम घर पर नहीं हैं।

एक नेता ने अस्पताल के नवनिर्मित ऑपरेशन थियेटर का उद्घाटन करते हुए अपने भाषण में कहा– भाइयो, ऑपरेशन थियेटर का निर्माण एक बहुत अच्छी बात है। इतने बड़े अस्पताल में मरीजों के मनोरंजन के लिए उनका अपना थियेटर होना बहुत जरूरी था।

– सांझवी (दिल्ली)

एक यात्री : (दूसरे यात्री के कंधे पर हाथ रखकर) यह कौन सा स्टेशन है।
दूसरा : भैया! यह कोई स्टेशन नहीं मेरा कंधा है।

पिता : (पुत्र से) बेटे, मैंने तुम्हें दवा पीने की शर्त पर दो रुपया दिया था। तुमने दवा पी कि नहीं?
पुत्र : पापा मैंने एक रुपये की टॉफियां खरीदी और एक रुपया छोटू को ईनाम में दे दिया क्योंकि उसने मेरे बदले दवा पी ली।

चिंटू : मास्टर जी, मैंने एक ऐसी चीज बनाई है जिससे हम दीवार के आर-पार देख सकते हैं।
मास्टर जी : वाह! वो क्या चीज है?
चिंटू : दीवार में छेद।

शिवम की माँ की तबीयत खराब हो गई।
डॉक्टर ने कहा : टेस्ट होंगे।
शिवम : हे भगवान अब क्या होगा? मेरी माँ तो अनपढ़ है।

– अखिलेश गुप्ता (सोनभद्र)

आलेख : परशुराम शुक्ल

एक घातक विषैली समुद्री मछली

सिंह मछली

सिंह मछली एक समुद्री मछली है। यह हिन्द महासागर के उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों में पायी जाती है। सिंह मछली एक रंग-बिरंगी सुन्दर मछली है किन्तु यह बड़ी खतरनाक होती है। यह स्कारपिनीडाइ परिवार की मछली है। इस परिवार की सभी मछलियों के काँटों में विष होता है। अतः इन्हें खतरनाक समझा जाता है।

सिंह मछली की शारीरिक संरचना सामान्य बिच्छू मछलियों के समान होती है। इसका रंग चमकदार कत्थई होता है तथा शरीर और मीनपंखों पर सफेद, कत्थई अथवा क्रीम रंग की धारियां होती हैं। इसकी छाती और पीठ के मीनपंखों का काँटेवाला भाग एक-दूसरे से अलग होता है। इसके काँटे एक-दूसरे से पूरी तरह स्वतन्त्र होते हैं तथा काफी बढ़े हुए होते हैं। सिंह मछली की छाती के मीनपंख मुलायम और चमकदार तथा पंख जैसे होते हैं। जिनसे यह बड़ी सुन्दर दिखाई देती है किन्तु इसकी सुन्दरता बड़ी भ्रामक होती है। सिंह मछली के काँटों में विष ग्रन्थियां होती हैं जिनमें विष भरा होता है। खतरे का आभास पाते ही यह अपने काँटे खड़े कर लेती है। काँटे खड़े कर लेने के बाद यह और अधिक भव्य एवं शानदार दिखाई देने लगती है किन्तु वास्तव में यह इसकी सर्वाधिक खतरनाक अवस्था होती है। सिंह मछली से सागर के मछुआरे हमेशा सावधान रहते हैं क्योंकि यह कभी-कभी अपनी पीठ के काँटों से मानव पर भी आक्रमण कर देती है। इसके काँटों के विष से पूरे शरीर में असहनीय दर्द होता है किन्तु शीघ्र उपचार मिल जाने पर जान बच जाती है। सिंह मछली के काँटों का विष केवल इसके जीवनकाल में ही नहीं रहता बल्कि इसके मर जाने के बाद भी इनमें विष रहता है। अतः मरी हुई सिंह मछली को भी बड़ी सावधानी से उठाना चाहिए तथा इसका परीक्षण करते समय विशेष सावधान रहना चाहिए।

सिंह मछली के रंग-बिरंगे काँटे अन्य समुद्री जीवों एवं इसके शत्रुओं के लिए चेतावनी का काम करते हैं। इसके चमकीले काँटे देखकर इसके शत्रु प्रायः इसके निकट नहीं आते हैं क्योंकि प्रकृति ने प्रायः उन्हीं जीवों को लाल, पीले, हरे, नीले चटक रंग दिये हैं जो घातक और विषैले होते हैं। ये रंग इन जीवों की सुरक्षा का कार्य करते हैं। इन्हीं रंगों के कारण सिंह मछली के शत्रु इससे हमेशा दूर ही रहते हैं।

बाल कथा : दिनेश दर्पण

वह घमण्डी हार गया?

किसी गाँव में दो व्यक्ति रहते थे। उनमें से एक तो गरीब था लेकिन था बड़ा ही चतुर बुद्धिमान और चालाक भी, जबकि दूसरा व्यक्ति बहुत पैसे वाला था पर था बहुत घमण्डी और उस व्यक्ति की बुद्धि भी ठस ही थी। वह खुद ही अपनी प्रशंसा किया करता था। वह लोगों से यह भी कहता-फिरता था कि ''दुनिया का कोई भी आदमी उसे मूर्ख नहीं बना सकता।'' दरअसल वह अपने आपको बहुत बुद्धिमान समझता था परन्तु वास्तविकता तो कुछ और ही थी।

सब लोग उसकी बात सुनकर हँस दिया करते थे। पर पैसे वाला और प्रभावशाली होने के कारण कोई भी उसके सामने कुछ भी नहीं कहता था। इससे वह निरंकुश, मुँहफट और घमण्डी हो गया। एक दिन वह कहीं जा रहा था। तभी अचानक उसने देखा कि उसका गरीब पड़ोसी रास्ते के किनारे एक पेड़ की टूटी हुई डाल (शाखा) को अपने कंधे पर रखकर खड़ा हुआ है। उस घमण्डी व्यक्ति को यह बात समझ में नहीं आई कि ''वह पेड़ की टूटी हुई डाल को इस तरह कंधे पर रखकर क्यों खड़ा है?''

वह उस गरीब व्यक्ति के पास जाकर बोला– मैंने सुना है कि तुम बड़े चतुर और बुद्धिमान हो। मगर मैं तो तुम्हें तभी चतुर और बुद्धिमान मानूंगा जब तुम मुझे मूर्ख बना दोगे। क्या मेरे जैसे चतुर-चालाक और होशियार आदमी को मूर्ख बनाने की तुम में ताकत है और है तो करके दिखाओ; इतनी बुद्धि है तुम्हारे पास?

गरीब किन्तु बुद्धिमान और चतुर व्यक्ति बड़ी विनम्रता से बोला– मूर्ख तो तुम्हें मैं एक मिनट में बना सकता हूँ पर क्या करूँ मेरी अक्ल की झोली घर पर ही छूट (रह) गई है। अगर तुम कहो तो मैं अपने घर जाकर अपनी अक्ल की झोली ले आऊँ। तब तक तुम इस पेड़ की टूटी हुई डाल को मेरी ही तरह कंधे पर रखकर खड़े रहो। बोलो 'हाँ' कहते हो तो मैं घर जाऊँ?

उस घमण्डी ने गरीब व्यक्ति का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उसने कहा– ठीक है, तुम जाओ और अपनी अक्ल की झोली ले आओ। तब तक मैं तुम्हारी जगह पर तुम्हारी ही तरह पेड़ की डाल को अपने कंधे पर रखकर खड़ा रहूँगा।

फिर वह घमण्डी व्यक्ति उस पेड़ की डाल को अपने कंधे पर रखकर वहाँ खड़ा हो गया। वह गरीब पर चतुर आदमी अपनी अक्ल की झोली लेने अपने घर ऐसा गया कि फिर वह वापस लौटकर नहीं आया। इस तरह उसने उस घमण्डी को मूर्ख बनाकर उसका घमण्ड हमेशा-हमेशा के लिए तोड़ दिया।

जनवरी अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **निम्रता** — 13 वर्ष
   वॉर्ड नं. 10, बुढ़लाडा,
   जिला : मानसा (पंजाब)

2. **अंबर लाम्बा** — 9 वर्ष
   412, बी-12, अभिनव अपार्टमेंट,
   वसुंधरा एंक्लेव, दिल्ली

3. **नम्रता** — 13 वर्ष
   गाँव व पोस्ट : अरसिया
   जिला : जौनपुर (उ.प्र.)

4. स्नेहा वालिया — 14 वर्ष
   गाँव व पोस्ट : ठाकुरपुरा,
   जिला : अम्बाला (हरियाणा)

5. शान्या सिंह — 12 वर्ष
   गली नं. 8, रामबाग कालोनी,
   रामघाट रोड, अलीगढ़ (उ.प्र.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

पुष्पदीप (प्रोफेसर कालोनी, पटियाला), मानवी बंसल (मंदिर चौक, लहरागागा), नैतिक राज (चाणक्य पुरी, वडोदरा), नवदिशा (लोकनायकपुरम, दिल्ली), डेजी (मोहनी नगर, वृन्दावन), वंदिता (सेक्टर-82, फरीदाबाद), हर्षिता (लक्ष्मी नगर, मंडी गोबिंदगढ़), सुहानी (एनआईटी, फरीदाबाद), विधिता (द्वारका, दिल्ली), रिद्धि (राजनगर, दिल्ली), चिराग, मोहित गुरनाणी, आर्या हेमराजानी, ऋषि चेलानी, यशिका, मंथन पंजवाणी, कृष्णा, नंदिनी, आंचल, हार्दिक, चांदनी, लहर मूलचंदानी, अनंत, शिव बम्बाणी, कुश खिनाणी, ओम सोमजनी, द्विज कमनाणी, निशिका मनवाणी, प्रणति जोशी, मुस्कान, सुमित रूपाणी (गोधरा)।

अप्रैल अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **10 मई** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया'**, निरंकारी कॉम्पलेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **जुलाई अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया को मैं और मेरा परिवार इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका हँसती दुनिया पूरी दुनिया में अपने आप में अकेली पत्रिका है।

हर माह की शुरुआत में ही हमें पत्रिका का इन्तजार रहता है। हँसती दुनिया की सम्पूर्ण सामग्री ज्ञानवर्द्धक होती है। **– मनोज कुमार (दिल्ली)**

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। मुझे इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। जनवरी अंक में लोक-कथा, 'एक खाऊँ दो खाऊँ' तथा 'विक्रमादित्य का सिंहासन' कहानी अच्छी लगी तथा पढ़ो और हँसो पढ़कर मैं अपने दोस्तों को सुनाता हूँ तो लोटपोट हो जाते हैं। मैं और मेरे परिवार के सदस्य हँसती दुनिया को बहुत पसन्द करते हैं।

– पूर्णसिंह सैनी (राजनगर, दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया का पाठक हूँ। हँसती दुनिया का प्रत्येक अंक बड़ा ही ज्ञानवर्द्धक और रोचक लगता है। स्तम्भों में 'अनमोल वचन' और 'कभी न भूलो' शिक्षाप्रद होते हैं। 'पढ़ो और हँसो' भी अच्छे लगते हैं। **– संजीव कुमार (चंदौसी)**

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत ही अच्छी लगती है। मैं बड़े चाव से हँसती दुनिया पढ़ता हूँ एवं हँसती दुनिया आने का इंतजार करता हूँ तथा अपने मित्रों को भी हँसती दुनिया पढ़ाता हूँ। मैं इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। मेरी मनोकामना है कि यह हँसती दुनिया दिन-प्रतिदिन उन्नति के रास्ते पर अग्रसर रहे। **– शोभित (इटावा)**

मुझे हँसती दुनिया बहुत पसंद है। मैं हँसती दुनिया पत्रिका प्रतिमाह पढ़ती हूँ। 'कभी न भूलो' काफी शिक्षाप्रद होते हैं। मैं हँसती दुनिया की प्रगति हेतु ईश्वर से मंगलकामना करती हूँ।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

हँसती दुनिया वास्तव में नन्हें-मुन्ने बच्चों की प्रिय पत्रिका है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि बड़ों के लिए इसकी कुछ अहमियत नहीं है। इसमें बड़ों के लिए भी ज्ञानवर्द्धक बातें हैं।

– दीपक जेस्वानी (हिंगनघाट)

मैं हँसती दुनिया कई वर्षों से नियमित पढ़ता आ रहा हूँ। कम लागत में ढेर सारी ज्ञानवर्द्धक सामग्री सिर्फ हँसती दुनिया में ही मिलती है। हँसती दुनिया बुलंदियों की ओर बढ़ती ही रहे यही हम कामना करते हैं।

इस पत्रिका की यह खूबी है कि इसका ज्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ता। महीना शुरू होने से पहले ही पहुँच जाती है।

– चरन पपरालवी (अरनौली, कैथल)

फरवरी माह की पत्रिका पढ़कर मेरा मन प्रसन्नता से खिल उठा। मुझे हँसती दुनिया पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। हँसती दुनिया अपने नाम के अनुरूप ही है। हँसती दुनिया वास्तव में लोगों को हँसाने का कार्य करती है।

हँसती दुनिया बच्चों के मार्गदर्शन एवं मनोरंजन का साधन है। छोटे बच्चों के साथ-साथ बड़े भी हँसती दुनिया को बड़े चाव से पढ़ते हैं।

– राही निरंकारी (रेलवे कालोनी, दिबियापुर)

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा नियमित रूप में प्रकाशित होने वाली

पत्र-पत्रिकाएं

सन्त निरंकारी

❖ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली **'सन्त निरंकारी'** विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें सद्गुरु वचनामृत एवं अनुभवी लेखकों की तर्कपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं।

एक नज़र

❖ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र **'एक नज़र'** में सद्गुरु माता जी के दिव्य वचन एवं मिशन की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित होते हैं।

हँसती दुनिया

❖ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक **'हँसती दुनिया'** में रोचक कहानियां, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं एवं चित्रकथाएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता हेतु सम्पर्क करें :-

Tel. : 011-47660200 (Extn. : 862)
Email : patrika@nirankari.org

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया-

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को फोन नं. 011-47660200 अथवा Help Line 011-47660360 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

-सुलेख 'साथी'

प्रबन्ध सम्पादक, पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्पलेक्स, बुराड़ी रोड़, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।